KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY

Website: www.kgcollege.ac.in Phone: 0481 2505212 Email: mail@kgcollege.ac.in

3.3.2 BOOKS AND CHAPTERS

2022-23		
SL NO	**NAME OF AUTHOR**	**BOOK**
1	Dr A Priya	Mancheey Kavyadhara Aur Nav Vimarsh
2	Dr A Priya	Pravasi Hindi Sahity Aur Sanskriti
3	Dr A Priya	Swachandathavadi Sahithya Ek Punarpat
4	Dr A Priya	Hindi Sahitya Aur Manav Adhikar
5	Dr A Priya	Hindi Ke Samakaleen Kavi Sarjana Ke Ayaam
6	Dr A Priya	Asthitv Ki Thalash Mein Nari
7	Dr A Priya	Samakaleen Lekhikaom Ke Sahithy Mein Sthreevad
8	Dr A Priya	21vim Sadi Ka Sankramankaleen Naatya Sahithya
9	Dr A Priya	Asmitha Ka Prashna Aur Sthree Swar
10	Dr A Priya	Sahity Ke Ayeene Mein Samaaj
11	Dr A Priya	Hindi Sahity Aur Samaj
12	Dr A Priya	Sahitya Mein Janajatheey Jeevan Darshan
13	Dr A Priya	Krishna Sahity - Vividh Sandarbh
14	Dr Mini Joseph	South India Journal of Social Sciences

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

15	Feba Achu Andrews	Environment Impact Assessment
16	Feba Achu Andrews	Legislative Measure for Environmental Protection at National and International Level
17	Anoop K R	Sahithya Sidhandhangal
18	Mahima Ann Abraham	Anti-oxidant and Cytotoxic Effects of Simarouba Glauca on Highly Metastatic B16F10 Melanoma Cells

Prof. (Dr.) Renny P. Varghese
Principal
Kuriakose Gregorios College
Pampady, Kottayam - 686 502

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

"आजादी का अमृत महोत्सव" एवं महाविद्यालय के "सुवर्ण महोत्सव" के अवसर पर

ज.जि.म.वि.प्रसा.सह.समाज का

श्री.एस.एस.पाटील कला, श्री.भाऊसाहेब टी.टी.सालुंखे वाणिज्य एवं श्री.जी.आर.पंडीत विज्ञान (नूतन मराठा) महाविद्यालय, जलगांव (महाराष्ट्र)

द्वारा आयोजित

तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

मंचीय काव्यधारा और नव-विमर्श

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

-: संपादक :-

प्रधानाचार्य. डॉ. एल. पी. देशमुख
डॉ. राहुल संदानशिव

अथर्व पब्लिकेशन्स

मंचीय काव्यधारा और नव-विमर्श

© सुरक्षित

ISBN : 978-93-94269-07-1
पुस्तक प्रकाशन क्र. ९७१

प्रकाशक
युवराज भटू माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स
धुलियाँ : १७, देविदास कॉलनी, वरखेडी रोड, धुलियाँ - ४२४००१.
संपर्क : ९४०५२०६२३०
जलगाँव : शॉप नं. २, नक्षत्र अपार्टमेंट, शाहूनगर हौसिंग सोसायटी, तेली समाज मंगल कार्यालय के सामने, जलगाँव - ४२५००१.
संपर्क : ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७
ई-मेल : atharvapublications@gmail.com
वेबसाइट : www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती : २८ डिसेंबर २०२२ **टाईप सेटिंग :** अथर्व पब्लिकेशन्स
मूल्य : १९५/-

E-Book *available on*
amazon.in ▪ GooglePlayBooks ▪ atharvapublications.com

ऑनलाइन पुस्तक खरेदीसाठी www.atharvapublications.com

इस पुस्तक का कोई भी हिस्सा इलेक्ट्रॉनिक या अत्याधुनिक सोशल मीडिया माध्यमों द्वारा - प्रकाशक और लेखक की लिखित अनुमति के बिना फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या सूचना भंडारण तकनीक का कोई अन्य साधन उपयोग नहीं किया जा सकता है। सभी अधिकार सुरक्षित है। इस पुस्तक के लेखों में व्यक्त किए गए विचार संबंधित लेखकों के हैं और जरूरी नहीं कि संपादक/प्रकाशक इससे सहमत होंगे।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

अशोक चक्रधर की कविता में समाज

डॉ. प्रिया ए.
असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाड़ी, कोट्टयम, केरल

अशोक चक्रधर हिंदी साहित्य के विद्वान कवि एवं लेखक हैं। वे कविता की वाचिक परंपरा का विकास करनेवाले प्रमुख विद्वानों में से एक हैं। हास्य की विधा के लिए उनकी लेखनी मशहूर है। इन्होंने सबसे पहले अपनी कविता १९६० में देश के रक्षा मंत्री 'कृष्णा मेनन' को सुनाई थी और इन्हें इस कविता पर काफी सराहा गया। इसीके साथ १९६२ में एक कवि के रूप में अपनी मंचीय जीवन की पहली कविता पढ़कर सुनाई। वे कवि होने के साथ-साथ धारावाहिक लेखक, कलाकार, वृत्तचित्र लेखक, निर्देशक, टेलिफिल्म लेखक, अभिनेता आदि रूपों में कार्यरत हैं। उन्हें २०१४ में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। उनकी की कुछ रचनाएें इस प्रकार हैं - जाने क्या, बोल गप्पे, बूढ़े बच्चे, हँसो और मर जाओ, तमाशा, चुपपुटकुले, सिक्के की औकात आदि।

मंचीय कविता पुरातनकाल से संप्रेषण की एक महत्वपूर्ण विधा है। अशोक चक्रधर की रचनाओं में सामाजिक समस्याओं का उल्लेख मिलता है। स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विकास में मदद करता है। आर्थिक विकास और एक राष्ट्र के सफल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में मदद करता है। महिला शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में मदद करती है।

अशोक चक्रधर की कविताऐं जटिल परिस्थितियों एवं आज की विसंगतियों पर नज़र रखती है। इनकी रचनाऐं जीवन से जुडी हुई, श्रोताओं को रस आनंदित करते हुए वैचारिक धरातल पर संदेश का संप्रेषण करती है उनकी कविताऐं मानवीय संवेदनाओं से ओत-प्रोत हैं। अपनी लेखनी के द्वारा समाज को दिशा निर्देश करने में वे सक्षम सिद्ध होते हैं।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

प्रवासी हिन्दी साहित्य और संस्कृति

विविध विमर्श

डॉ. शबाना हबीब

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY 686 502

☛ इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। संपादक, लेखक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचार प्रसारित नहीं किया जा सकता।

पुस्तक : प्रवासी हिन्दी साहित्य और संस्कृतिः विविध विमर्श

संपादक : डॉ. शबाना हबीब

आई.एस.बी.एन. : 978-93-92439-08-7

संस्करण : प्रथम, वर्ष 2022

© : संपादक

मूल्य : 475.00 मात्र

प्रकाशक : साहित्य रत्नाकर
'रामालय', म. न. 15, प्रथम तल, सिद्धार्थ नगर,
गूबा गार्डेन, कल्याणपुर, कानपुर-208017 (उ.प्र.)
मोबाइल नं. 8960421760, 9044344050

शब्द सज्जा : अमन ग्राफिक्स, रामबाग, कानपुर

मुद्रक : आर. बी. ऑफसेट, नौबस्ता, कानपुर

PRAVASI HINDI SAHITYA & SANSKRITI: VIVIDH VIMARSH

Editor : **Dr. Shabana Habeeb**

Price : Rs. Four hundred seventy five Only

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

अंजना संधीर की कविता में मानवीय संवेदना

-डॉ. प्रिया ए.

समकालीन हिंदी साहित्य के क्षेत्र में 'प्रवासी साहित्य' एक नयी धारा बनकर अपनी भूमिका अदा कर रहा है। भारत के बाहर विदेशों में रहने वाले भारतीय मूल के सृजनात्मक लेखन को मुख्य रूप से प्रवासी साहित्य कहा जाता है। प्रवासी लेखक अपनी रचनाधर्मिता के तहत अपने अनुभवों और मनोभावनाओं को अपने देश तक सम्प्रेषित करते हैं। तद्वारा वे अपनी मूल संस्कृति से जुड़ने का प्रयास करते हैं। कई प्रवासी साहित्यकार अपनी लेखन प्रणाली से देश और विदेश की संस्कृति के समन्वय एवं संवेदनाओं के भिन्न आयामों को प्रस्तुत करते हैं। प्रवासी साहित्य में 'अंजना संधीर' एक सशक्त कवयित्री के रूप में विद्यमान हैं। इनका जन्म उत्तरप्रदेश के रुढ़की में हुआ था। वे अमरीका के न्यूयार्क में रहकर अपने रचना कर्म को पूरी कर्मठता से निभा रही हैं।

अंजना संधीर की कविता में हमें विदेशी इतिहास, भूगोल, सामजिक साँस्कृतिक स्थिति आदि का परिचय मिलता है। उन्होंने समाज की समस्याओं को सही अर्थों में समझने का प्रयास किया है। उनकी सभी रचनाओं में मानवीय संवेदना के स्पंदन को परख सकते हैं। विदेशों में बसे भारतीयों के पराएपन से ग्रस्त जीवन की झाँकी प्रस्तुत करने के साथ ही देश की ओर वापसी की इच्छा को भी 'चलो, फिर एक बार' शीर्षक कविता व्यक्त करती है-"चलो/फिर एक बार/चलते हैं/हकीकत में/खिलते हैं फूल जहाँ/महकता है केसर जहाँ/सरसों के फूल और लहलहाती हैं फसलें/हँसते है रंग-बिरंगे फूल/मंडराती हैं तितलियाँ/छेड़ते हैं भँवरे/झूलती हैं झूलों में धडकनें/घेर लेती है सतरंगी दुपट्टों से/सावन की फुहारों में/चूमती है मन को/देती है जीवन/जहाँ जीवन लगता है सपना।"[1]

इस कविता में एक ओर देश के विरासत की महत्ता को एवं उससे कट जाने के दंश को झेलते व्यक्ति की पीड़ा को देख सकते हैं। दूसरी ओर गाँव के परिवेश और लहलहाती खेतों की सुन्दरता की वर्णना को अत्यंत संजीवता से प्रकट किया है।

देश से बिछुड़ने की अंतरतम वेदना उनकी कविता की विशेषता है। अपनी मिट्टी, जन्मभूमि तथा मातृभाषा के लगाव-अलगाव को प्रवासी रचनाकार अपने भाव-बोध के अनुरूप अभिव्यक्त करते हैं। मन के भीतर की वेदना, संघर्ष, सुख-दुःख, यादें,

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

भारतीय सभ्यता और संस्कृति को ही पूरे विश्व में श्रेष्ठ माना जाता है। इस श्रेष्ठता को बनाए रखने की कोशिश कवयित्री ने की है। अपनी कविताओं के ज़रिए हमारी देश की सामाजिकता का चित्रण लोगों तक पहुँचाने में भी वे सफल सिद्ध होती हैं।

प्रवासी साहित्य में मानवीय संवेदना का भावपूर्ण रूप से यथार्थ का ज्वलंत चित्रण मिलता है। हिंदी साहित्य में प्रवासी जीवन की गाथा को सुनाने वालों में अंजना संधीर का नाम उल्लेखनीय है। उनकी कविताओं में काम, क्रोध, चिंता, भय, आशा और अवसाद आदि मानवीय संवेदनाएँ अपने मार्मिक और यथार्थ रूप में चित्रित हुई हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय मूल्यों एवं भारतीय अस्मिता की ही लड़ाई प्रस्तुत की है। भारतीय मूल्यों से प्रतिबद्ध होने के साथ-साथ उन्होंने स्त्री शोषण, दमन एवं अमानवीय ताकतों को अभिव्यक्ति देने एवं स्वस्थ मानवीय समाज के निर्माण का स्वप्न भी प्रस्तुत किया है।

संदर्भ

1. http://काव्य कोश - अंजना संधीर - प्रतिनिधि रचनाएँ - चलो फिर एक बार
2. http://काव्य कोश - अंजना संधीर - प्रतिनिधि रचनाएँ – ज़िन्दगी एहसास का नाम है
3. http://काव्य कोश - अंजना संधीर - प्रतिनिधि रचनाएँ – संवाद चलना चाहिए
4. http://काव्य कोश - अंजना संधीर - प्रतिनिधि रचनाऐं – सभ्य मानव
5. http://काव्य कोश - अंजना संधीर - प्रतिनिधि रचनाएँ – प्रेम में अंधी लड़की
6. http://काव्य कोश - अंजना संधीर - प्रतिनिधि रचनाएँ – स्वाभिमानिनी
7. http://काव्य कोश - अंजना संधीर - प्रतिनिधि रचनाएँ – तुम अपनी बेटियों को
8. http://काव्य कोश - अंजना संधीर - प्रतिनिधि रचनाएँ – कैसे जलेंगे अलाव
9. http://काव्य कोश - अंजना संधीर - प्रतिनिधि रचनाएँ – ओवर कोट
10. http://काव्य कोश - अंजना संधीर - प्रतिनिधि रचनाएँ - अमरीका हड्डियों में जम जाता है

असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाड़ी, कोट्टयम, केरल-686502
मोबाईल -9447294227, 9946318613
Email : priyauday111@gmail.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

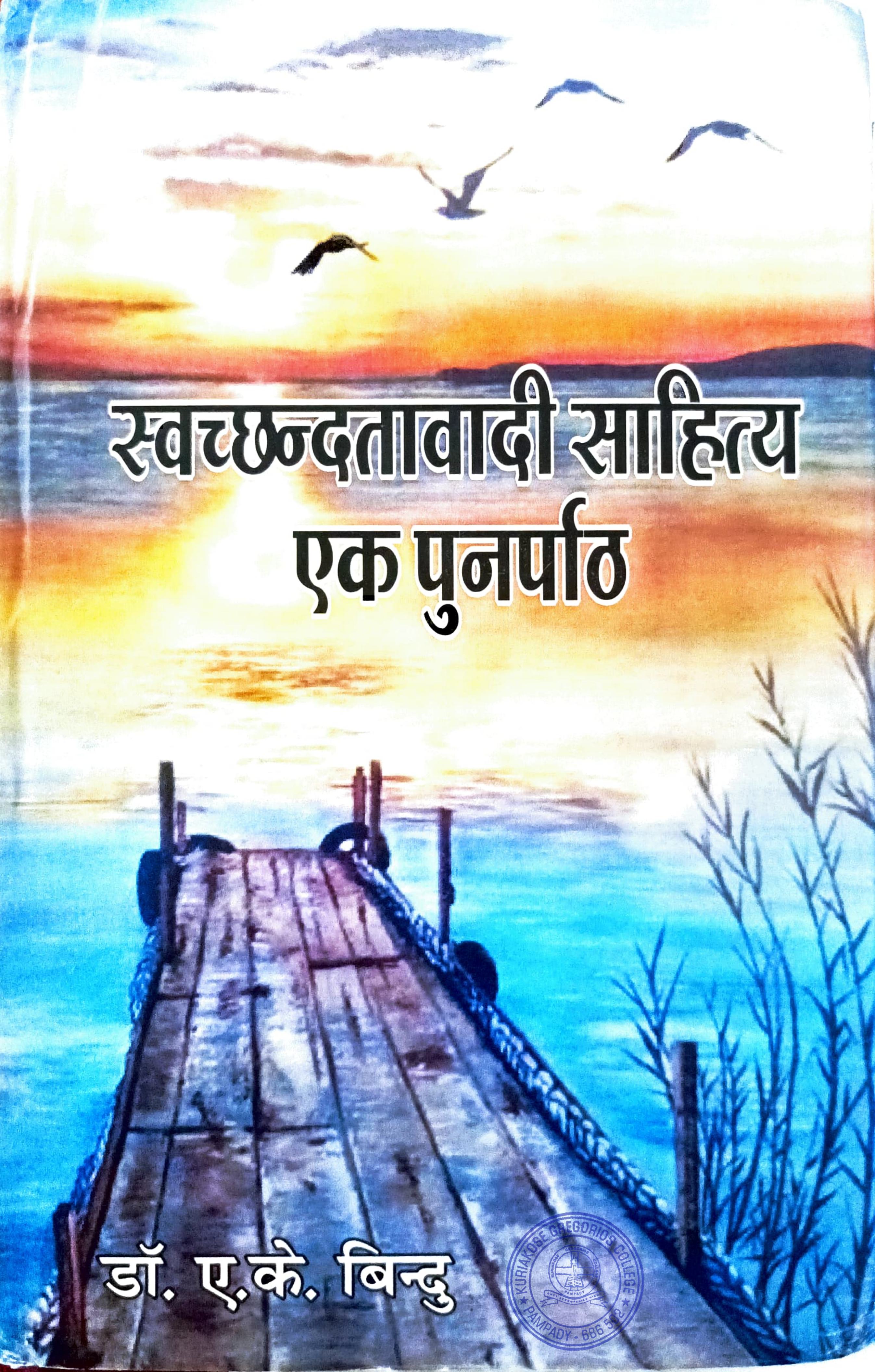

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

ISBN 978-93-91335-08-3

पुस्तक	:	स्वच्छन्दतावादी साहित्य : एक पुनर्पाठ
संपादक	:	डॉ. ए.के. बिन्दु
प्रकाशक	:	**विद्या प्रकाशन** सी–449, गुजैनी, कानपुर–22 दूरभाष : (0512) 2285003 मो० : 09415133173 Website: www.vidyaprakashankanpur.com E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम 2022
शब्द सज्जा	:	शिखा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	अनिका डिजिटल, कानपुर
मूल्य	:	₹ 995/-

Swachchhandatawadi Sahitya: Ek Punarpath

Edit By : Dr. A.K. Bindhu

Price : Nine Hundred Ninety Five Only.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

सुमित्रानंदन पंत की कविता में पारिस्थितिक विस्मयबोध

- डॉ० प्रिया. ए.

हिंदी काव्यशास्त्र में स्वछन्दतावाद शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के रोमांटिसिजमके आधार पर हुआ है। इस शब्द की व्युत्पत्ति फ्रांसीसी भाषा के रोमांस, रोमांच शब्द से हुई है। इसी का विशेषण रोमांटिक है। रोमांस प्रधान यूरोपीय साहित्य में प्रेम, शौर्य, छल–कपट एवं उद्धामवासनाओं का प्राधान्य था, इसे स्वछन्दतावाद कहा गया। स्वछन्दतावाद, नवशास्त्रवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न हुआ है। इसकी विद्रोहात्मक प्रवृत्ति ने काव्य को कृत्रिमता के बंधन से बांधा है। साहित्य में स्वछन्दतावाद की लहर जर्मन, इंग्लैंड, फ्रांस, इटली, पुर्तगाल, रूस, पोलैंड और भारत में हुई। अंग्रेजी में स्वछन्दतावाद का उन्नायक वर्डस्वर्थ को माना जाता है। उसके बाद कॉलरिज, कीट्स आदि को माना जाता है। हिंदी साहित्य में आचार्य शुक्ल ने श्रीधर पाठक को इस वाद का प्रवर्तक माना है। हिंदी में यह आंदोलन बंगला साहित्य के माध्यम से छायावादी काव्य में आया। सन 1920 से सन 1938 तक की अवधि में स्वछन्दतावाद के नाम से अभिहित इस वाद की प्रवृतियां हैं – सौंदर्य भावना, प्रकृति प्रेम, मानवीय दृष्टिकोण, आत्माभिव्यंजना,नीति विद्रोह, रहस्यमय भावना,व्यक्तिगत प्रेमाभिव्यक्ति, अहम का उदात्तीकरण, निराशा,पलायन, नवीन कल्पना आदि।

सुमित्रानंदन पंत स्वछन्दतावादी धारा के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि थे । उनकी संपूर्ण काव्य रचनाएं अपने आप में एक दूसरे की स्तर पर अध्ययन की मांग करती हैं। पंत को अपने काव्य बोध और जीवन के वस्तुगत सत्यों के प्रति तटस्थ, ईमानदार और उत्तरदायित्व पूर्ण दृष्टि रही है। अपने काव्य जगत के माध्यम से उन्होंने जीवन के प्रति एक निर्वैयक्तिक धारणा को अर्जित एवं अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है। ऐसे जीवन दृष्टि की खोज ही उन्हें स्वछन्दतावादी धारा से जोड़ती है ।

पंत जी की कविता में अपने भीतर छिपे सत्य का उद्घाटन या बाह्य जगत का यथावत वर्णन मिलता है। साथ ही कवि के अंतःविकास एवं प्रतिभा को रूप देने वाली एक कलात्मक अभिव्यक्ति को भी पूर्णता प्राप्त होती है।

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

द्वारा नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का प्रयत्न किया गया है। आकाश, धरती, जल, वायु–पेड़, पौधे, चिड़िया जैसे प्राकृतिक उपादान पारिस्थितिक बिंबोंके रूप में प्रस्तुत होते हैं। समकालीन परिवेश में प्रकृति का प्रदूषण एवं शोषण बडी मात्रा में हो रहा है। पंत की कविताओं के अध्ययन से पारिस्थितिक बोध की संवेदना ही पाठकों में संप्रेषित होती है।पंत की कविता ऐसे प्रकृति विरोधी परिवेश में मनुष्य की जड़ों का एवं मानवीय संस्कृति की खोज करती है। मानवीय संस्कृति के प्रत्युत्तर में प्रकृति ही हमारे सम्मुख उपस्थित है। पंत की कविताओंके अध्ययन एवं पुनर्पाठ से पारिस्थितिक बोध की संवेदना ही पाठकों में संप्रेषित होती है। इसी पारिस्थितिक बोध के संवेदनात्मक धरातल पर ही सुमित्रानंदन पंत और उनकी कविताई आज भी प्रासंगिक सिद्ध होती हैं।

संदर्भ

1. सुमित्रानंदन पंत – पल्लविनी – पृ. 226
2. सुमित्रानंदन पंत – पल्लविनी – पृ. 220
3. सुमित्रानंदन पंत –बादल (पल्लव)– पृ. 187
4. सुमित्रानंदन पंत –नौका विहार (गुंजन)– पृ. 229
5. सुमित्रानंदन पंत –एक तारा (गुंजन)– पृ. 227
6. सुमित्रानंदन पंत –युगांत– पृ. 228
7. सुमित्रानंदन पंत –बापू के प्रति (युगांत)– पृ. 229
8. सुमित्रानंदन पंत –युगांत– पृ. 230
9. सुमित्रानंदन पंत –कौवे के प्रति (स्वर्ण किरण)– पृ. 231
10. सुमित्रानंदन पंत –कौए बतखें मेंढ़क (स्वर्ण किरण)– पृ. 328
11. सुमित्रानंदन पंत –छप्पन (गीत अगीत)– पृ. 115–116

सहायक आचार्या
हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाडी, कोट्टयम

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

हिन्दी साहित्य और मानव अधिकार

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

डॉ. लता डी.

ISBN : 978-93-91454-30-2

© : सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक : गोविन्द पचौरी
जवाहर पुस्तकालय
हिंदी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक
सदर बाज़ार, मथुरा-281001 (उ.प्र.)
दूरभाष : 09897000951
ई-मेल : jawahar.pustakalaya@gmail.com

मूल्य : 525.00 (पाँच सौ पच्चीस रुपये मात्र)

प्रथम संस्करण : 2022

आवरण : विनीत शर्मा

शब्द-संयोजन : गीता डिजाइनिंग ग्रुप, दिल्ली-110094
मो. : 09350345268

मुद्रक : जय भारत प्रेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

(7)

पवन करण की कविता में स्त्री जीवन एवं मानवाधिकार की भावना

–डॉ. प्रिया ए.

मानवाधिकार प्रत्येक शासन व्यवस्था का अभिन्न अंग होता है। इसे किसी भी सभ्य समाज की आधारशिला के रूप में माना जाता है। भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में मानवाधिकार की अनिवार्यता बढ़ जाती है। दुनिया भर के देशों में आम जनता के जीवन को मानवाधिकारों से सुसज्जित किया जा रहा है। इस मायने में महिलाओं के मानवाधिकार भी काफी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। विश्व के सभी देशों में महिलाओं को सम्मानपूर्वक अपना जीवन बिताने के लिए विशेष अधिकार दिए गए हैं। भारतीय संविधान में स्त्रियों के लिए पर्याप्त अधिकार घोषित करने के बावजूद भी उन पर ज्यादा अत्याचार हो रहे हैं। अत: महिलाओं के मानवाधिकार का हनन बड़ी मात्रा में हो रहा है।

वैश्वीकरण के इस जटिल समय में स्त्री की अस्मिता, स्वत्व एवं अधिकार की भावनाओं पर लगातार अत्याचार हो रहे हैं। ऐसे संकट ग्रस्त परिवेश में समकालीन कवि पवन करण स्त्रीपक्षीय पुरुष दृष्टि को हमारे सामने अपनी रचनाओं के माध्यम से परिचित कराते हैं। इस तरह मैं (2000), स्त्री मेरे भीतर (2004), अस्पताल के बाहर टेलीफोन (2009), कहना नहीं आता (2012), कोट के बाजू पर बटन (2013) कल की थकान (2017) स्त्री शतक-दो भाग–उनका अद्यतन काव्य संग्रह है, आदि उनके श्रेष्ठ काव्यसंकलन हैं। इन संकलनों की रचनाओं के द्वारा उन्होंने स्त्री को एक अलग नजरिए से समझने का एवं समझाने का प्रयास किया है। स्त्रियों के मानवाधिकार के प्रति सजग भावना को वे अपनी कविता में व्यक्त करते हैं।

पवन करण का पहला काव्य संकलन है 'इस तरह मैं' इस संकलन की एक कविता है 'चूल्हा'। स्त्री हो या पुरुष, मनुष्य अपनी बुनियादी जरूरतों में सब से पहले रोटी को प्रधानता देता है। यह कविता चूल्हा और रोटी के

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

लेखक संपर्क

- **डॉ. अनामिका अनु**
  अनामिका विल्ला, हाउस नंबर 31, कावुलेन, श्रीनगर, वल्लाकाडावु, त्रिवेंद्रम, केरल पिन-695008
  फोन 8075845170, ई-मेल : anamikabiology248@gmail.com
- **डॉ. सुमा.एस** (सह प्राचार्य)
  हिंदी विभाग सरकारी आर्ट्स एंड साइंस कोलेज, कालीकट
- **प्रो. डॉ. एस. आर जयश्री,**
  हिंदी विभाग, केरल विश्वविद्यालयद्य
- **डॉ. एस. सुनिल कुमार** (असोसियेट प्रोफेसर)
  यूनिवर्सिटी कॉलेज तिरुवनन्तपुरम्
- **डॉ. पी.के. प्रतिभा** (सह आचार्या)
  हिंदी विभाग, श्री नीलकंठ सरकारी संस्कृत कॉलेज, पट्टाम्पि, पालक्काट-679306
- **डॉ. प्रिया ए.** (असिस्टेंट प्रोफेसर)
  हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज, पाम्याडी, कोट्टयम-686502 मो : 9447294227
- **प्रो. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद** (असोसिएट प्रोफेसर)
  हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय, हिमामयतनगर ता. हिमायतनगर जि. नांदेड
- **डॉ. सुधा. ए.एस** (सहायक आचार्य)
  हिन्दी विभाग यूनिवेर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम। फोन : 9497853785
- **डॉ एलिसबत जॉर्ज** (असिस्टेंट प्रोफेसर)
  सरकारी वनिता कॉलेज, तिरुवनंतपुरम।
- **Dr.Ambili.T, M.A.** (Mphil PhD, Asst.Professor)
  Dept of Hindi Govt college for women, Thiruvananthapuram, Kerala, Phone: 9495369970, E-mail:Ambilihindi@gmail.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

हिन्दी के समकालीन कवि सर्जना के आयाम

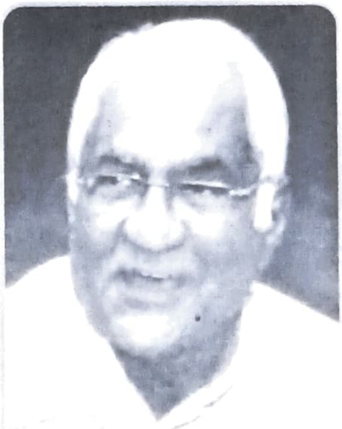

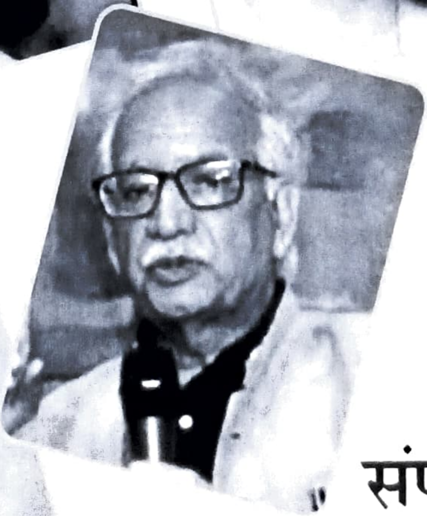

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

संपादक
डॉ. नीतू परिहार

हिंदी के समकालीन कवि : सर्जना के आयाम

ISBN : *978-81-86064-88-7*

© : लेखक

मूल्य : पाँच सौ रुपये

संस्करण : 2022

प्रकाशक : अंकुर प्रकाशन
1/1 कांजी का हाटा, गायत्री मार्ग
उदयपुर (राज.) 313001
फोन नं. : (0294) 2417094, 2417039
(मो.) 9413528299
ईमेल : ankurprakashan15@gmail.com

आवरण : एन.वी.आर्ट, उदयपुर

टाईपसेटिंग : देवेन्द्र कम्प्यूटर, दिल्ली

मुद्रक : आर्यन डिजिटल प्रेस,दिल्ली

Hindi Ke Samkaleen Kavi : Sarjana Ke Ayam *(Hindi Literature)*

₹ 500

Edited By : Dr. Neetu Parihar

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

12

मंगलेश डबराल की कविता में ग्लोबल समय का जीवन यथार्थ

—डॉ० प्रिया ए.

मंगलेश डबराल साठोत्तरी दशक के कवि हैं। उनकी कविताओं में समय और समाज के स्पन्दन के बीच जीवन-यथार्थ का बयान करने वाले काव्य बिम्बों का वर्णन हुआ है। जीवन के सामजिक संकटों से युक्त सन्दर्भों को मंगलेश डबराल की कविताऐं जीवन के प्रामाणिक पाठ की तरह स्पष्ट करती हैं। उनकी रचनाएँ जीवन के गहन संस्कारों से हमें अवगत कराती हैं। समाज में संवेदना के नए धरातल पर जीवनानुभूतियों को उन्मुख भी करती हैं। उनकी कविताऐं विलक्षण अर्थों की प्रतीति से समकालीन हिंदी कविता की जीवन चेतना को विस्तृत बनती हैं। उनके छह काव्य संकलन प्रकाशित हुए हैं—पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं, आवाज भी एक जगह है, नए युग में शत्रु और स्मृति एक दूसरा समय है। उन्होंने कविता को जीवन मूल्यों की तरह जीने का प्रयास किया। उनकी रचनाएँ समय के यथार्थ एवं मानवीयता से दीप्त होती हैं। उन्होंने अपने रचनालोक के जरिए मानवीय जीवन के संकट एवं आस्थावादी दृष्टिकोण को परिभाषित किया। ग्लोबल समय की विद्रूपताओं को उन्होंने सशक्त रूप में अपनी कविता का विषय बनाया है।

मंगलेश डबराल ने समकालीन समय की जटिलताओं को परखने की कोशिश की है। भूमंडलीकरण के समय समाज सर्वग्रासी उपभोक्तावाद की चपेट में फँस गया है। मानव-जीवन की त्रासदी को उजागर करते हुए मानवीयता को

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

2. मंगलेश डबराल-नए युग में शत्रु-आधुनिक सभ्यता, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2013-पृ. 43
3. मंगलेश डबराल-आवाज भी एक जगह है—बाजार, वाणी प्रकाशन, 2000-पृ. 58
4. मंगलेश डबराल-घर का रास्ता—खिलौने, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1988-पृ. 73
5. मंगलेश डबराल-नए युग में शत्रु-नए युग में शत्रु, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2013-पृ. 15
6. मंगलेश डबराल-घर का रास्ता—पत्थरों की कहानी, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1988-पृ. 34
7. मंगलेश डबराल-नए युग में शत्रु-घटती हुई ऑक्सीजन, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2013-पृ. 12
8. मंगलेश डबराल-आवाज भी एक जगह है—आयोजन, वाणी प्रकाशन, 2000-पृ. 87
9. मंगलेश डबराल-नए युग में शत्रु-यथार्थ इन दिनों, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2013-पृ. 16
10. मंगलेश डबराल-नए युग में शत्रु-हमारे शासक, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2013-पृ. 24

—सम्पर्क :
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल-686502
मो : 9447294227, 9946318613
Email : priyauday111@gmail.com

❑❑❑

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

ISBN No :- 978-93-94455-04-7

बिलासा प्रकाशन

मुख्य कार्यालय :- ओम शांति कृषि फार्म, ग्राम- मेंण्ड्रा, पोस्ट- सैदा,
तहसील-तखतपुर, बिलासपुर (छ.ग.) पिन-495001

चलभाष : 8305777964, 8223002666

ई-मेल : bilasapublication@gmail.com

•

मूल्य : 280.00 रुपये

प्रथम संस्करण 2022 © ज्योति कुशवाहा

मुद्रक :- कौशिक प्रिन्टर नई दिल्ली

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

Book Name ASTITV KI TALASH ME NARI
by Jyoti Kushvaha

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग या मंचन सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम, पात्र, भाषा-शैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है, किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

महिला सशक्तीकरण और मानवाधिकार

डॉ. प्रिया ए.
असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी विभाग,
के.जी. कॉलेज पाम्पाडी कोट्टयम, केरल

मानवाधिकार वे अधिकार होते हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति को मानव मात्र होने के नाते ही प्राप्त होते हैं। मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम 1993 में मानवाधिकारों को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि "व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता, समानता और गरिमा से संबन्धित वे अधिकार मानवाधिकार कहलाते हैं जो संविधान द्वारा प्रत्याभूत हैं, अंतरराष्ट्रीय संधियों में उल्लिखित हैं अथवा भारत में न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय हैं।"[1] भारत में विधि का शासन है और भारतीय विधि में मानवाधिकारों के संरक्षण से संबन्धित कई प्रावधान किए गए हैं। हमारे संविधान और कानून में विधानसभा द्वारा मानवाधिकार से संबन्धित कई व्यवस्थाएँ की गयी है। मानवाधिकार किसी भी सभ्य समाज की आधारशिला है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में इसकी अनिवार्यता बढ़ जाती है। आम व्यक्ति को पर्याप्त मानवाधिकार उपलब्ध हैं तो उस समाज विशेष को सभ्य, सुसंस्कृत और विकसित कहा जा सकता है।

हमारे देश में मानवाधिकार सार्वभौमिक रूप से लागू हैं। मानवाधिकार एक गतिशील अवधारणा है, जो समय के अनुरूप बदलती रहती है। आजकल प्रत्येक मनुष्य को प्राप्त करने के अवसर भी उपलब्ध है। वर्तमान समय दुनियाभर में मानवाधिकारों की रक्षा के लिए आंदोलन चल रहे हैं। यह एक प्रामाणित तथ्य है कि दुनिया में सब से अधिक अपराध और अत्याचार महिलाओं के खिलाफ होते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में महिलाओं के मानवाधिकार काफी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। विश्व के लगभग सभी देशों में महिलाओं को विशेष अधिकार दिए गए हैं ताकि वे सम्मानपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

महिला आंदोलन के इस दौर में एक ओर जहाँ महिलाओं को अधिकाधिक अधिकार दिए जाने की कवायद चल रही है, वहीं दूसरी ओर महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास भी जारी है। शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने के कारण महिलाओं को अपने घर के बाहर जाना पड़ता है। अपने स्कूल, कार्य स्थल जहाँ भी हो उसे कई प्रकार के अपराधों का,

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

सम्मकालीन लेखिकाओं के साहित्य में स्त्रीवाद

सं. डॉ. अमनदीप कौर

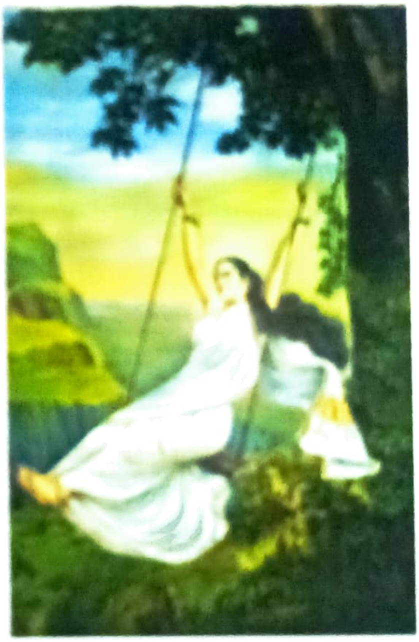

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

प्रधान कार्यालय :
गीना प्रकाशन
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
मोबाइल : 9466532152, 8708822674
ई-मेल : ginapk222@gmail.com

व्यवस्थापक गीना प्रकाशन ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली से पुस्तक प्रकाशित करवाकर मुख्य कार्यालय से वितरित की।

ISBN : 978-93-93010-11-7

© : लेखक

मूल्य : ₹ *500 /-*

प्रथम संस्करण : सन् 2022

प्रकाशक : सानिया पब्लिकेशन
323, गली नं. 15,
कर्दमपुरी एक्सटेंशन,
दिल्ली-110094
मोबाइल : 8383042929
email : saniapublicationindia@gmail.com

आवरण : एम. सलीम

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिंटर्स
जगतपुरी विस्तार, दिल्ली-110093

Samkaleen Lekhikaon Ke Sahitya Mein Strivaad
Edited by Dr. Amandeep Kaur

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

प्रवासी स्त्री कविता में स्त्रीवाद की संकल्पना

डॉ. प्रिया ए.
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल-686502
मो : 9447294227, 9946318613
e-mail : priyauday111@gmail.com

भारतीय मूल के विदेशों में रहनेवालों के सृजनात्मक लेखन को प्रवासी साहित्य कहा जाता है। इन संवेदनशील साहित्यकारों ने अपने प्रवास के दौरान हिन्दी को केन्द्र में रखकर अपनी जड़ों से बिछुड़कर नयी राह बनाने की कोशिश की है। प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी संवेदनाओं को कविता के माध्यम से सशक्त ढ़ंग से चित्रित किया है। इनकी कविताओं में समाज के विविध रूप दिखाई देते हैं। प्रवासी कविता के क्षेत्र में अपने द्वारा अपनाए हुए देश के परिवेश, संघर्ष एवं उपलब्धियों को प्रवासी कवयित्रियों ने आत्मीय तरीके से वर्णित किया है। उनकी रचनाओं में वतन से दूर रहने की वेदना, संस्कारों की जकड़ से छुटकारा पाने की छटपटाहट, अलग वातावरण में ढ़लने की कोशिश की पीड़ा, परिवार के बिखरने की व्यथा आदि सामाजिक सरोकारों से युक्त भावना व्यक्त हुई हैं। इसके साथ ही स्त्रियों की समस्या, सामाजिक कुरीतियों व अन्याय का पर्दाफाश भी किया गया है।

हिन्दी साहित्य के फलक को विस्तृत करने में प्रवासी स्त्री कवयित्रियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनमें प्रमुख हैं--अंजना संधीर, सुधा ओम ढ़ींगरा, रेखा मैत्र, दिव्या माथुर, कविता वाचक्वनवी, पूर्णिमा वर्मन, सुदर्शन प्रियदर्शिनी, पुष्पिता अवस्थी, सुषम बेदी, रेखा राजवंशी, वंदना मुकेश आदि।

प्रवासी कविताएँ मानवीय जीवन यथार्थ के भीतर मूल्यों की तलाश करनेवाली हैं। भारतीय अपनी मातृभूमि व रिश्तों से अलग होकर विदेशी परिवेश में तालमेल नहीं बिठा पाते। क्योंकि भारत व विदेश की संस्कृति-सभ्यता एवं जीवन-शैली में अत्यधिक अंतर होता है। स्त्री की मनोभावना में सभी धर्मों और देशों में नारी का स्थान दोयम दर्जे का रहा है। यह दृष्टिकोण अंजना संधीर की कविता 'वे चाहती हैं लौटना'

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

21वीं सदी का संक्रमणकालीन नाट्य साहित्य

KURIAKOSE GREGORIUS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

संपादक
डॉ. विजय गणेशराव वाघ

ए. आर. पब्लिशिंग कंपनी

1/11829, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

फोन : +91 9968084132, +91 7982062594

e-mail : arpublishingco11@gmail .com

21VIN SADI KA SANKRAMANKALEEN NATYA SAHITYA

Edited by Dr. Vijay Ganeshrao Wagh

ISBN : 978-93-88130-89-9

Criticism

© लेखकाधीन

प्रथम संस्करण : 2022

मूल्य : 395.00

साज-सज्जा : शेष प्रकाश शुक्ल

मोबाइल : 97-16-54-35-13

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम से प्रयोग करने के लिए प्रकाशक व लेखक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

25. लहरों के राजहंस नाटक में प्रतीक योजना

—डॉ. प्रिया ए.

हिन्दी नाटक के क्षेत्र में भारतेन्दु और प्रसाद के बाद लीक से हटकर मोहन राकेश का नाम ही आता है। उनके द्वारा ही हिन्दी नाटक और रंगमंच को नई गरिमा, प्रतिष्ठा तथा व्यापकता प्राप्त हुई। हिन्दी में पहली बार मानव अस्तित्व के मूल में प्रश्न उठानेवाले नाटककार के रूप में मोहन राकेश को ही ख्याति प्राप्त हुई। उन्होंने आधुनिक मानव की पीड़ा और उलझन को अपने नाटक का विषय बनाया था। उनके पूरे नाटक मानवीय अस्तित्व के संकट से घिरे हैं। उनकी रचनाएँ एक विशिष्ट धरातल पर जीवन का अर्थ खोजती हैं एवं जीवन की विसंगतियों और उनके प्रति आक्रोश के बीच से उनके नाटकों के अर्थ प्रस्तुत होते हैं।

मोहन राकेश नाटककार एवं रंगमंच के बीच के सहयोग की माँग करते हैं। उन्होंने यह प्रयास किया है कि उनके सभी नाटक रंगमंचीय धरातल पर विराचित हो। राकेश रंगमंचीयता को नाटक का अनिवार्य एवं अभिन्न अंग मानते हैं। उनके सभी नाटक रंगमंचीयता के व्यापक गुणों से संपन्न हैं। उनके अनुसार, "हिन्दी रंगमंच को हिन्दी भाषी प्रदेश की सांस्कृतिक पूर्तियों और आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करना होगा, रंगों और राशियों के हमारे विवेक को व्यक्त करना होगा। हमारे दैनंदिन जीवन के राग-रंग को प्रस्तुत करने के लिए, हमारे संवेदों और स्पंदनों को अभिव्यक्त करने के लिए जिस रंगमंच की आवश्यकता है, वह पाश्चात्य रंगमंच से कहीं भिन्न होगा। इस रंगमंच का रूपविधान नाटकीय प्रयोगों के अभ्यंतर से जन्म लेगा और समर्थ अभिनेताओं तथा दिग्दर्शकों के हाथों उसका विकास होगा।"[1] इसमें कोई तर्क नहीं कि जितना समृद्ध उनके नाटकों का भावतत्व है उतना ही उनका शिल्प भी। उनका रंगबोध प्रखर है, रंगमंच की अपेक्षाओं की उनकी समझ गहरी है, इससे उनके नाटकों को संपूर्ण रंग परिकल्पना में आँका जा सकता है। उनकी कोशिश यही रही है कि नाटक के कथ्य का सम्प्रेषण केवल शब्दों के स्तर पर ही न हो बल्कि उसके

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

20. **डॉ. शिंदे मालती धोंडोपन्त**
सहयोगी प्राध्यापक
नारायणराव वाघमारे महाविद्यालय, आ.बालापुर
जि. हिंगोली (महाराष्ट्र) 431701
दूरभाष : 9421867650

21. **सिमरन, शोध छात्र**
दिल्ली विश्वविद्यालय. दिल्ली
दूरभाष : 8512029148

22. **राधा आत्माराम राठोड, शोधछात्र**
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय औरंगाबाद
दूरभाष : 8329218798, 7875875137

23. **डॉ. अर्जुन सिंह पंवार**
अतिथि विद्वान, शासकीय महाविद्यालय, बाजना
जिला रतलाम (म. प्र.), दूरभाष : 9977220258

24. **डॉ. सुरिन्द्रपाल कौर**
सहायक प्रोफेसर
डिस्टेंस ऐजुकेशन विभाग
पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला
दूरभाष : 9855455361

25. **डॉ. प्रिया ए.**
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल-686 502
दूरभाष : 9447294227, 9946318613

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

26. **डॉ. शोभा बघेल**
ड्रीम्ज पब्लिक स्कूल
मुलताई जिला बैतुल (म.प्र.)
दूरभाष : 9425659345

□□

अस्मिता का प्रश्न और स्त्री स्वर

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

सं. डॉ. राहुल कुमार
काजल कुमारी

परिकल्पना

© सम्पादकद्वय

प्रथम संस्करण : 2022

ISBN : 978-93-95104-01-2

मूल्य : ₹ 495

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना*, के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084
से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ल, दिल्ली से टाइप सेट होकर
काम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

प्रवासी हिंदी कविता में स्त्री-स्वर

–डॉ. प्रिया ए.
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाड़ी, कोट्टयम (केरल)

समकालीन हिंदी साहित्य के क्षेत्र में 'प्रवासी साहित्य' एक नयी धारा बनकर अपनी भूमिका अदा कर रहा है। भारत के बाहर विदेशों में रहनेवाले भारतीय मूल के सृजनात्मक लेखन को मुख्य रूप से प्रवासी साहित्य कहा जाता है। प्रवासी लेखक अपनी रचनाधर्मिता के तहत अपने अनुभवों और मनोभावनाओं को अपने देश तक सम्प्रेषित करते हैं। एतद द्वारा वे अपनी मूल संस्कृति से जुड़ने का प्रयास करते हैं। कई प्रवासी साहित्यकार अपनी लेखन प्रणाली से देश और विदेश की संस्कृति के समन्वय एवं संवेदनाओं के भिन्न आयामों को प्रस्तुत करते हैं। प्रवासी साहित्य में 'अंजना संधीर' एक सशक्त कवयित्री के रूप में विद्यमान हैं। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के रुढकी में हुआ था। वे अमरीका के न्यूयार्क में रहकर अपने रचना कर्म को पूरी कर्मठता से निभा रही हैं।

अंजना संधीर की कविता में हमें विदेशी इतिहास, भूगोल, सामजिक-साँस्कृतिक स्थिति आदि का परिचय मिलता है। उन्होंने समाज की समस्याओं को सही अर्थों में समझने का प्रयास किया है। उनकी सभी रचनाओं में मानवीय संवेदना के स्पंदन को परख सकते हैं। विदेशों में बसे भारतीयों के पराएपन से ग्रस्त जीवन की झाँकी प्रस्तुत करने के साथ ही देश की ओर वापसी की इच्छा को भी 'चलो फिर एक बार' शीर्षक कविता व्यक्त करती है, "चलो / फिर एक बार/ चलते हैं / हकीकत में / खिलते हैं फूल जहाँ / महकता है केसर जहाँ / सरसों के फूल और लहलहाती हैं फसलें / हँसते है रंग-बिरंगे फूल / मंडराती हैं तितलियाँ / छेड़ते हैं भँवरे / झूलती हैं झूलों में धडकनें / घेर लेती है सतरंगी दुपट्टों से / सावन की फुहारों में / चूमती है मन को / देती है जीवन / जहाँ जीवन लगता है सपना।"[1]

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

साहित्य के आइने में समाज

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

डॉ. सीमा सूर्यवंशी
डॉ. मनीषा आमटे

ISBN : 978-93-95288-30-9
मूल्य : छः सौ रुपये मात्र

पुस्तक	:	**साहित्य के आईने में समाज**
संपादक	:	डॉ. सीमा सूर्यवंशी
		डॉ. मनीषा आमटे
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस**
		A/2122 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,
		कानपुर – 208 021
		Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com
		info@vanyapublications.com
		Website : www.vanyapublications.com
		Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	**2022**
मूल्य	:	**600.00**
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर
आवरण	:	गौरव शुक्ल, कानपुर
मुद्रण	:	सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

2

कविता में साँस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति

—डॉ. प्रिया ए.

हमारा समय जो है, उत्तराधुनिकता का वैश्वीकृत माहौल है। बाज़ारवाद, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण आदि का प्रभाव समाज और साहित्य पर प्रतिबिंबित होता है। ऐसे वैश्वीकृत परिवेश में हमारी नैतिकता, मानवीयता, संस्कृति–सभ्यता सब धूमिल होती जा रही है। इस परिवेश को सही ढंग से परखने हेतु हमें आधुनिक समय के साहित्य पर भी नज़र डालनी चाहिए। यहाँ पर आधुनिक समय के साहित्यकारों की कलात्मक सृजन की आलोचनात्मक पड़ताल करनी है। कलात्मक सृजन में कल्पना की ज़रूरत होती है। कल्पना मनोवैज्ञानिक धरातल पर उपजती है। मनोवैज्ञानिक धरातल पर कुछ विषय लगातार एक श्रृंखला के रूप में प्रस्तुत होता है। कला तथा साहित्य से संबन्धित क्षेत्र में सृजनात्मक सक्रियता के लिए कल्पना एक आवश्यक अंग है। कुछ निश्चित भावनायें अनुभव करके उन्हें कलात्मक बिम्बों में ढालकर साहित्यकार, कलाकार और संगीतकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं को भी उसी भावनाओं का अनुभव कराता है। कलाकार या साहित्यकार की सक्रियता में भाग लेनेवाली कल्पना अत्यधिक संवेगात्मक होती है। इस संवेगात्मक कल्पना से साहित्यकार तथा कलाकार अपने मन के भावों का बाहय प्रदर्शन करता है। अमेरिकी वैज्ञानिक वुडवर्थ के अनुसार 'संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है'।[1] जब साहित्य में संवेगात्मक अभिव्यक्ति होती है, तब आलोचना की पड़ताल होती है। आलोचनात्मक पड़ताल के लिए किसी विषय को उसके लक्ष्य का ध्यान रखते हुए गुण–दोषों का विवेचन करना है।

आलोचनात्मक पड़ताल के बहाने हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी के रचना संसार से रूबरू होने का अवसर प्राप्त हुआ। सोहनलाल द्विवेदी की कविताई भारतीयता की भावना से युक्त है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि 'भारतीयता आध्यात्मिकता की तरंगों से ओतप्रोत है।'[2] सार्वभौम राष्ट्र की एकता को, अखंडता को अक्षुण्ण रखने के प्रयास को

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

पंडित, जी होता चिड़िया बन जाऊं, हम नन्हे–नन्हे बच्चे है, नकली शेर, मूर्ख पंड़ित जैसी बाल कविताएँ बच्चों को हमारे देश के महत्व को जानने एवं उसका आनंद लेने के लिए लिखी गई है। बाल कविता हमारे साहित्य की एक समृद्ध बिरासत है। इतिहास एवं संस्कृति का ज्ञान भी इससे प्राप्त होता है।

इन रचनाओं के माध्यम से सोहनलाल द्विवेदी ने सामाजिक प्रतिबद्धता को, मानव पक्षधरता को निभाते हुए अपनी रचनाधर्मिता को बखूबी निभाया है। मूल्यच्युति के इस मानवविरोधी समय में उनकी रचनाएँ हमें सही मार्गदर्शन देते हुए अमर बनी हैं। अपने कलम की ताकत से उन्होंने समाज पर अपनी अमिट छाप छोड़ दी है। उनकी संवेदना में, संवेगात्मक कल्पना में भारत एवं भारतीयता सशक्त रूप प्रतिबिंबित होता है। आज भी उनके विचार बहुत ही सकारात्मक, आशावादी दृष्टिकोण को प्रस्फुटित करनेवाले हैं। वस्तुतः मेरा मानना है कि वे इस उत्तराधुनिक समय में भी प्रासंगिक हैं। भारतीयता की प्रवृत्तियों से जुड़ी अपनी भावनाओं के संप्रेषणीयता के कारण वे कालजयी बन जाते हैं। सोहनलाल द्विवेदी जी की कविताओं की आलोचनात्मक पड़ताल मुझे ऐसे निष्कर्ष पर ही पहुँचा देती है।

संदर्भ

1. Wood Worth - 20th Century Western Personal Encyclopedia
2. स्वामी विवेकानन्द – विवेकानन्द के दर्शन
3. अज्ञेय – भारतीयता – पृ. 30
4. सोहनलाल द्विवेदी – भैरवी – पृ. 7
5. वही – युगावतार गाँधी – पृ. 11
6. वही – वह जन्मभूमि मेरी – पृ. 18
7. वही – खादीगीत – पृ. 20
8. वही – वसंती हवा – पृ. 14
9. वही – वह जन्मभूमि मेरी – पृ. 19
10. वही – गाँवों में किसान – पृ. 27
11. वही – कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती – पृ. 35
12. वही – दूध बतासा – पृ. 17

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाडी, कोट्टयम, केरल–686502
Email : priyauday111@gmail.com

हिंदी साहित्य और समाज

संपादक

प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार

प्रा. डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

परिकल्पना

© संपादकद्वय

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 595

ISBN : 978-93-95104-12-8

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

शिवानंद तिवारी द्वारा *परिकल्पना*, के. 37, अजीत विहार, दिल्ली-110092
से प्रकाशित और शेष प्रकाश शुक्ला, दिल्ली से टाइप सेट होकर
काम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032 में मुद्रित

भूमंडलीकरण और ज्ञानेन्द्रपति की कविता

डॉ. प्रिया ए.

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज, पाम्पाड़ी, कोट्टयम, केरल

मानव एवं प्रकृति को एक-दूसरे से अलग करके दोनों के विकास की कल्पना करना मुमकिन नहीं है। मानव द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के कारण ही पारिस्थितिकी की संकल्पना का विकास हुआ। हमारे देश में नदियों को माता का दर्जा दिया गया है। नदियों की पूजा करने की भी परंपरा रही ही। देश के सामाजिक व आर्थिक विकास में भी नदियों का महत्त्व होता है। हमारे देश के अधिक लोगों का मुख्य आधार खेती है। पूरे देश में हरियाली बनाए रखने के लिए नदियों की परम आवश्यकता रहती है।

वर्तमान में पर्यावरणीय गुणवत्ता में ह्रास हो रहा है। इसका मूलभूत कारण मानव की भौतिकवादी संस्कृति है। प्राकृतिक संसाधनों का अतिदोहन, औद्योगिक विकास, नगरीकरण जैसे अनेक कारणों से पूरी प्रकृति प्रदूषित हो गई है। पर्यावरण के प्रतिकूल परिवर्तन के कारण उसकी गुणवत्ता में ह्रास हो रहा है। मानव प्रकृति के साथ शत्रुतापूर्ण संबन्धों को स्थापित करते हुए प्रकृति को बलपूर्वक अपने वश में करने का प्रयास कर रहा है।

पृथ्वी की रचना में, जल, जंगल, जमीन एवं जीव-जगत का सहयोग रहा है। प्रारंभ से ही प्रकृति में इन सभी का संतुलनात्मक संबन्ध रहा हे। लेकिन मनुष्य तकनीकी विकास करके प्रकृति का तीव्रता से दोहन करने लगा। फलस्वरूप पारिस्थितिक असंतुलन उत्पन्न हो गया। इस असंतुलन से पृथ्वी पर जीव-जगत का अस्तित्व भी संकट में पड़ने लगा। ऐसे संकटग्रस्त परिवेश को समकालीन हिंदी कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है। 'ज्ञानेन्द्रपति' समकालीन हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर है। 'गंगातट' शीर्षक काव्यसंकलन वर्तमान समय के पारिस्थितिक संकटों पर इशारा करता है। नदी पारिस्थितिक तन्त्र में पर्यावरण

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

साहित्य में जनजातीय जीवन-दर्शन

संपादक

डॉ. योग्यता भार्गव

विभागाध्यक्ष, हिन्दी

संपोषित: एम पी एच ई क्यू आई पी एवं आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ,
शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अशोकनगर (मध्यप्रदेश)

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

इस पुस्तक के किसी भी अंश को लेखक की अनुमति के बिना पुनर्प्रकाशित या अनूदित करना अथवा किसी दृश्य, श्रव्य एवं प्रचार माध्यम में उपयोग करना वर्जित है।

ISBN : 978-93-5552-304-4

पुस्तक : साहित्य में जनजातीय जीवन-दर्शन
© : संपादक
संपादक : डॉ. योग्यता भार्गव
प्रकाशक : निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
37, ''शिवराम कृपा'' विष्णु कालोनी, शाहगंज, आगरा-10 (उ.प्र.)
मो० : 9458009531-38
E-mail : nikhilbooks.786@gmail.com
website : www.nikhilbooks.com
संस्करण : प्रथम 2022
मूल्य : ₹ 900/- ($25)
आवरण : कबीर राजौरिया, अशोकनगर (म.प्र.)
शब्द सज्जा : शिखा ग्राफिक्स
मुद्रक : श्री पूजा प्रिंटर्स

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

22. समकालीन हिंदी कविता एवं जनजातीय समाज

डॉ. प्रिया ए.

जनजातीय समाज अनेक दृष्टियों से मानवीय इतिहास के विकास का मूल है। विकास की अंधी दौड़ में पडकर मुख्यधारा समाज इनको अनदेखा करता रहता है। इसके कारण जनजातीय वर्ग की मूल्यवत्ता और महत्ता लगातार घटती जा रही है। भारतीय आदिवासी समाज का इतिहास संघर्षों की गाथाओं से भरा पड़ा है। नई सभ्यता या नई आर्थिक नीतियों से उत्पन्न स्थितियाँ आदिवासी समाज के जीवन को ज्यादा तंग कर रही है। आदिवासी संस्कृति एवं उनकी जीवन शैली पर भी अन्याय हो रहे हैं। साम्राज्यवादी ताकतें आज भी उसका शोषण कर रही हैं। जंगल के मूल निवासी को जंगलों से खदेड़ने की योजनाऐं हो रही हैं। इस समाज के प्रति संवेदनशील होकर कई समकालीन कवियों ने अपनी लेखनी चलायी है। आदिवासी साहित्य जीवन का प्रतिबिंब ही है। जीवन की समस्याओं के साथ–साथ प्रकृति से लगाव भी उसके साहित्य का आधार है।

आदिवासी चेतना के लेखन के अंतर्गत अपनी पीड़ा खुद कहने का समस्याओं का समाधान खुद ढूँढ़ने की चेष्टा एवं अपने संसाधनों पर कब्जा जमाने के षड्यंत्रों के विरुद्ध प्रतिरोध की भावना भी दृष्टिगत है। समानता, भाईचारा और आजादी के सूत्रों को एक साथ पिरोती हुई प्रकृति का सहयोगी सह–अस्तित्व का अभ्यस्त होना ही आदिवासी जीवन शैली है। छल–कपटता की भावना से मुक्त होकर ऊँच–नीच की भावना के परे होकर समानता की भावना के साथ ही यह समाज जीवन बिताता है। जनजातीय अस्मिता के संघर्ष में शामिल अपने पुरखों को याद करके 'अनुज लुगुन' लिखते हैं कि – "दुनिया भर में जिन्होंने वर्चस्व के खिलाफ / सहजीविता की लड़ाई लड़ी है / जिन्होंने सवाल खड़े किए / जिनके यहाँ जीवन का विकल्प मौजूद है / जयपाल सिंह मुंडा और / रेड इंडियन्स के पुरखों को ६ जिन्होंने कहा कि / यह धरती केवल मनुष्यों की नहीं है।"1

आदिवासियों की कई प्रकार की समस्याओं की ओर, व्यापक समाज एवं समय के विविध पहलुओं से ये पंक्तियाँ साक्षात्कार कराती हैं। मुण्डारी

- अनुज लुगुन- अघोषित उलगुलान–पृ. 66
- रोज केरकेट्टा- एक और जनी शिकार–पृ. 100
- महादेव टोप्पो- कलम को तीर होने दो–पृ. 121
- महादेव टोप्पो- कलम को तीर होने दो–पृ. 119

असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाड़ी, कोट्टयम, केरल–686502
मोबाईल – 9447294227, 9946318613
Email : priyauday111@gmail-com

●

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

कृष्ण साहित्य

(विविध संदर्भ)

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

सम्पादक
डॉ. नीतू परिहार

प्रतिलिप्याधिकार प्रकाशक व लेखक के अधीन सुरक्षित है। इनकी पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग का पुनः प्रकाशन वर्जित है। इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। इनसे किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए संपादक और प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं। किसी भी विवादास्पद स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उदयपुर मान्य होगा।

कृष्ण साहित्य : विविध संदर्भ

ISBN : *978-81-86064-98-6*

© : संपादक

मूल्य : चार सौ रुपये

संस्करण : 2023

प्रकाशक : अंकुर प्रकाशन
1/1 कांजी का हाटा, गायत्री मार्ग
उदयपुर (राज.) 313001
फोन नं. : (0294) 2417094, 2417039
(मो.) 9413528299
ईमेल : ankurprakashan15@gmail.com

आवरण : डॉ. शंकर शर्मा, उदयपुर

टाईपसेटिंग : देवेन्द्र कम्प्यूटर, दिल्ली

मुद्रक : रिसर्च प्रेस इण्डिया, दिल्ली

Krishna Sahitya : Vividh Sandarbh *(Hindi Literature)*
Edited By : Neetu Parihar ₹ 400

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

13

सूरदास के काव्य में लोकसंस्कृति के आयाम

—डॉ. प्रिया ए.

सूरदास की कविता का सबल पक्ष लोक और उसकी विविध छवियाँ है। ब्रज के लोक-जीवन की मुक्त और विस्तृत भूमि पर कृष्ण के चरित्र द्वारा सूर-काव्य का वितान विकसित हुआ। सूर की कविता महज हरि-कीर्तन नहीं, उनमें भावनाओं का अपार सागर है। वह प्रेम में आकण्ठ डूबे जीवन जीने की कला है। सूरदास ने पारिस्थितिक, सामाजिक, साँस्कृतिक मूल्यों को समसामयिक अनुभव के साथ जोड़कर समाज को भाव के साथ जीवन जीने की कला सिखाई। सूर ने कृष्ण-काव्य की परंपरा को आत्मसात कर कृष्ण की लोक-छवि प्रस्तुत की। महज मानवीय और सामाजिक भूमि पर सूर-काव्य में विकसित कृष्ण का चरित्र विशिष्ट है। ब्रज के लोक-पर्व, लोक-मान्यताएँ और लोक-संस्कार का सृजनात्मक चित्रण सूर-काव्य की विशिष्टता है। ब्रज की चारागाही और पशुपालन की संस्कृति में छिपे लोक-जीवन के विविध पहलुओं को सूर ने अपनी सृजनात्मकता से समृद्ध किया है। लोक-जीवन की अभिव्यक्ति के लिए सूर ने ब्रज-भाषा की लोक-छवियों का वर्णन किया है। मुहावरे, लोकोक्तियाँ और लोक-जीवन में प्रयुक्त शब्दावली का प्रयोग सूर-काव्य की उपलब्धि है।

सूरदास पीढ़ियों से चले आ रहे लोक-संस्कारों में प्रकट होनेवाली लोक-संस्कृति के कवि हैं। लोक-जीवन के अन्तर्गत लोक-प्रचलित आचार-व्यवहार, रीति-रिवाज़, पर्व-उत्सव, संस्कार, कला-कौशल आदि आते हैं। सूरदास के यहाँ ब्रज-संस्कृति का अक्षय भण्डार दिखाई देता है। उन्होंने अपने नायक को हर

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

को साहित्यिक ब्रज-भाषा में विन्यस्त कर सूर ने ब्रज-भाषा की सृजनात्मकता को बढ़ाया है।

संदर्भ—

1. www.kavykosh.org - सूरदास—सूरसागर

असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, के.जी. कॉलेज
पाम्पाड़ी, कोट्टयम, केरल-686502
मोबाईल : 9447294227, 9946318613
ईमेल : priyauday111@gmail.com

❑

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

SOUTH INDIA JOURNAL OF SOCIAL SCIENCES

Official Journal of the A.P. Academy of Social Sciences (Regd.)

December, 2022 Vol. XX No.4

BI ANNUAL (UGC Care Listed)

Founder Editor
Prof. K.S. Chalam
southindiajournal@gmail.com

Editorial Board

Sri K. Madhav Rao, IAS (Retd.)
Hyderabad

Prof. K. Ravi
Visakhapatnam

Prof. K. Ilaiah
Hyderabad

Prof. R.S. Deshpande
Bangalore

Prof. Y. Chinna Rao
New Delhi

Prof. M.R. Murthy
New Delhi

Prof. M. Thanga Raj
Chennai

Prof. P. Jogdand
Mumbai

The responsibility for the facts stated or opinions expressed is entirely of the author and not of the IESJ. Website: www.iesj.in

Note: Opinions expressed in the articles published in the SIJSS are those of the contributors. The board may not necessarily agree with the contributor.

The Editor
South India Journal of Social Sciences
4-53-1, L.B.Colony, Visakhapatnam-530017, A.P.
E-mail : southindiajournal@yahoo.co.in

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE ★ PAMPADY - 686 502 ★

MAKING FINANCIAL INCLUSION & FINANCIAL WELLBEING A REALITY- ROLE OF SFBS AND MFIS

Anu P. Mathew
Assistant Professor, Department of Commerce, Deva Matha College, Kuravilangad, Kottayam DT, Kerala
Dr. Mini Joseph (Corresponding Author)
Research Guide and Associate Professor in Commerce, K G College, Pampady Kottayam DT, Kerala

Abstract
Financial inclusion has been the buzz word propagated to make the country more inclusive. There were policies and strategies in place to bring every citizen of the nation under the purview of the broad spectrum of financial services. A vital role is played towards fulfilment of this purpose by the Small Finance Banks (SFBs) and Micro Finance Institutions (MFIs). They are indispensable in taking the financial services to the door steps of the masses especially in the rural areas. The most literate state in the country, Kerala is not different when it comes to the contribution of SFBs or MFIs. ESAF, the NBFC-MFI which was granted banking license to function as SFB hails from Kerala. On the other side, among MFIs, the State has a revolutionary MFI initiative through Kudumbashree, implemented by the Govt. of Kerala under the State Poverty Eradication Mission (SPEM). Justifying the meaning of the word, Kudumbashree ensures grace to the families who are its members. This study being an exploratory and analytical study focuses on the way ESAF and Kudumbashree intervenes in the lives of the rural poor to empower them financially and foster economic growth. The investigator interviewed 105 respondents who are customers of ESAF and Kudumbashree, who have availed micro credit from the institutions. The results were tabulated and analyzed to draw inferences on how positively the influence of the institutions paved way for financial wellbeing of the rural women.

Keywords: ESAF, Kudumbashree, Financial Inclusion, Repayment Status, Financial Wellbeing

Introduction

Taking banking to the doorsteps of the layman has been the priority for banks both old and new generation. SFBs are a new entrant into Indian Banking System with a differentiated focus on Financial Inclusion (rbidocsrbi.org.in). The role of Microfinance has been critical in driving financial inclusion in India (home.kpmg). The annual Financial Inclusion Index, the FI Index for the period ending 31st March 2021 stood at 53.90 against 43.40 for the period ending March 2017. Financial wellbeing is a true indicator of financial health or financial position in this turbulent situation. Meeting existing and future commitments (Kempsonet.al., 2017), having money left over for non-essentials (Elliot &Vlave, 2013), feeling financially healthy and secure (Barclays, 2014) so that they are confident to meet the future challenges are all indicators of financial wellbeing. Financial inclusion means that individuals and businesses have access to useful and affordable financial products and services that meet their needs – transactions, payments, savings, credit and insurance – delivered in a responsible and sustainable way. (world bank.org). Financial inclusion and financial wellbeing experienced by the rural low income people of Kerala and the role of ESAF(SFB) and Kudumbashree (MFI) is being explored through this study. The research questions arising in this backdrop are:

Do SFBs and MFIs promote financial inclusion?
How is the repayment behaviour of borrowers after accessing credit?
How far do they experience financial wellbeing?
Are financial inclusion and financial wellbeing related to each other?

The study aims to find answers to these questions through responses collected from rural women who are borrowers from lending institutions, Esaf and kudumbashree.

Review of Literature

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

(CFPB, 2015) Consumer Financial Protection Bureau has been conducting intensive research in the domain of financial wellbeing and developed a scale to measure financial wellbeing. **(Stromback et.al. (2017)**investigated the influence of a person's psychological characteristics on the financial behaviour and financial wellbeing. **(Barman et.al, 2009)** conducted a comparative study of microfinance models to analyze role of microfinance interventions in Financial Inclusion. **(Shankar, 2013)** aimed to investigate financial inclusion in India and whether microfinance institutions address access barriers.

Research Objectives

- ✓ The objectives of the research study were as follows:
- ✓ To evaluate the financial inclusion facilitated by SFBs and MFIs for the rural poor.
- ✓ To analyze the status of repayment of credit by the rural poor.
- ✓ To identify the factors influencing default in repayment of credit among the rural poor.
- ✓ To evaluate the whether the rural poor experience financial wellbeing.

Research Hypotheses

H0 1: The mean score of factors influencing repayment default is the same for all occupation groups.

H0 2: The mean score of financial wellbeing is the same for all occupation groups.

H0 3: There is no difference in the financial wellbeing experienced by regular borrowers and defaulters.

*H0 4:*Borrowers of ESAF and Kudumbashree experience the same level of financial wellbeing.

H0 5: There is no significant relationship between Financial Inclusion and Financial Wellbeing

Methods

From among the rural women population of Kerala, a total sample size of one hundred and fiveborrowers of Esaf and Kudumbashree were chosen for the study through Snowball Sampling method. For the purpose of the study, data was collected through primary and secondary sources. Secondary data which included journal articles, research papers, working papers, books and websites, provided the conceptual base for the study. Primary data was gathered from respondents through a carefully drafted interview schedule. Testing of hypotheses was done using inferential statistical methods such as Independent sample t test, ANOVA andPearsonProduct Moment Correlation.

Results

The data collected online through the interview schedule, provided insights on the major aspectsas discussed below:

Table 3.1 Name of Lending Institution

Name	Frequency	Percent
ESAF	31	29.5
Kudumbashree	74	70.5
Total	105	100.0

70.50 % respondents were borrowers of kudumbashree, the MFI and 29.50 % of them were borrowers of Esaf, the SFB.Among the total respondents, 34.30 % were day labourers, whereas 24.8 % were self-employed, 17.10 % were home makers and 15.2 % were private employees.

Table 3.3 Nature of Repayment of Credit

Nature	Frequency	Percent
Paid Regularly	76	72.4
Installments Defaulted	29	27.6
Total	105	100.0

Among the total respondents, 72.4 % used to make regular payment of installments due whereas 27.6 % have made defaults in repayment of installments. Financial inclusion among the rural

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY 686 502

FUNDAMENTALS OF ENVIRONMENTAL EDUCATION

RESOURCE MATERIAL FOR ENVIRONENTAL EDUCATORS

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Editor: Anu Jose Vengal

Edition - 01

FUNDAMENTALS OF ENVIRONMENTAL EDUCATION

RESOURCE MATERIAL FOR ENVIRONMENTAL EDUCATORS

EDITION - 1

Addressing the need for an authoritative academic work to make sense of this rapidly growing subject and its multidisciplinary corpus of scholarly literature, 'Fundamentals of Environmental Education' is a venture from a group of enthusiastic professionals in science education.

Edited by a teacher educator who has been experienced in science education and research for over a decade, this collection embraces various topics to bring together the foundational knowledge of Environmental Education in a single volume.

This book covers the undergraduate syllabus of Environmental Education at different Universities in Kerala.

'Fundamentals of Environmental Education' is a comprehensive compilation of current topics in the field, which will equip the learners to understand the concepts well.

It is an essential repository of materials on Environmental Education and is destined to be valued by scholars and students as a vital one-stop pedagogic resource.

PUBLISHED BY:

RCS BOOKS
Puthanagady Road, Kanjirappally,
Kottayam (Dist) - 686507
rcsbookstore@gmail.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

ISBN: 978-93-5680-718-1
978-93-5680-718-1

FUNDAMENTALS OF ENVIRONMENTAL EDUCATION

© Rights Reserved
First Published: November 2022

Anu Jose Vengal
Assistant Professor of Natural Science Education
Titus II Teachers College, Thiruvalla, Kerala.
annuvengal@gmail.com

Published by
RCS Books
Puthangady Road, Kanjirappally,
Kottayam - 686507
Mob: 8138876772

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means
without prior written permission from the publisher.

Rs. 320/-
ISBN: 978-93-8680-718-1
978-93-5680-718-1

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

CONTRIBUTORS

1. Anu Jose Vengal (Chapters 1 & 6)
   Assistant Professor
   Titus II Teachers College
   Thiruvalla
2. Arun Sam Chacko (Chapters 9 &10)
   M.Sc Botany
   CSIR-JRF/NET
3. Ashlin Biju (Chapters 13 & 21)
   M.Sc Botany
4. Feba Achu Andrews (Chapters 3 & 4)
   M.Sc Zoology
   UGC-JRF/NET
   GATE (Life Sciences)
   GATE (Ecology)
5. Harishma K H (Chapters 14 &15)
   B.Sc Zoology
6. Kripa John (Chapters 2 & 5)
   M.Sc Botany
7. Krishna Pradeep (Chapters 11 &12)
   M.A English
8. Leena Varghese (Chapters 7 & 8)
   M.Sc Mathematics
9. Sheney Murali (Chapters 17 &18)
   M.Sc Zoology
10. Sooraj C K (Chapters 7 &16)
    M.Sc Zoology
11. Sujeesh K George (Chapters 19 & 20)
    M.Sc Botany

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

CONTENT

Page No.

PART ONE –ENVIRONMENTAL EDUCATION

1 Meaning,Nature, Objectives and Psychological Perspectives of Environmental Education 09

2 National Movements to Protect the Environment and Relevance of Western Ghats 14

3 Environmental Impact Assesement 23

4 Legislative Measures for Environmental Protection at National and International Level 31

5 Methods and Strategies for Cultivating Ecoliteracy at Primary,Secondary and Higher Secondary Level 64

6 Environmental Citizenship – Importance, Environmental Ethics and Environmental Accountability 84

PART TWO – Our Environment

7 Ecosystem -Charateristics and Function 88

8 Energy flow in the Ecosystem, Ecological Succession, Ecological Pyramids 91

9 Bio-Geochemical Cycles 105

10 Carrying Capacity and Ecological Balance 113

PART THREE – Challenges of Environment

11 Environmental Pollution 116

12 Basic Concepts of Environmental Issues 139

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

13 Population Explosion and Urbanisation 151

14 Waste Management 159

15 Disasters 163

PART FOUR – Education for Sustainable Development

16 Sustainable Development and Education 169

17 Natural Resources: its Conservation and Role of Individuals 173

18 Bio-diversity and its Conservation 190

PART FIVE – Environment and Behavior

19 Environmental Sensitivity and Environmental Stress 201

20 Environmental Stressors 207

21 Effect of Stressors on Health and Behaviour 216

22 Bibliography 224

23 Subject Index 230

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

CHAPTER 3

ENVIRONMENTAL IMPACT ASSESSMENT

The future of a country is defined by its agricultural and industrial development. Development processes in several domains are essential for a nation to progress socially, economically, and politically. The third world is in the process of such developments too. But this is one side of the coin. What are the costs of such progress, not in terms of money but in terms of the impact on our environment, which is equally or even more valuable? Because development and the environment are inextricably intertwined, any development cycle is destined to have an influence on the environment in a variety of ways.

One of the most extensively used procedures for identifying and mitigating unfavourable ecological impacts of development proposals is the Environmental Impact Assessment (EIA). The United Nations Environment Programme (UNEP) published a set of EIA aims and principles in 1987. The EIA examines many options for completing a project without negatively impacting the environment, as well as identifying the option with the optimal balance of cost of environmental impacts and benefits.

An EIA is a data collection process carried out by the developer and other agencies that allows a Local Planning Authority to understand the environmental effects of a development before deciding whether or not it should proceed. The emphasis on using the finest available sources of objective information in carrying out a systematic and holistic approach is crucial in environmental assessments. This procedure should be free of bias and allow the local government and the entire community to fully comprehend the proposed development's implications.

Thus, an EIA is a review, analysis, and evaluation of proposed operations with the goal of ensuring environmentally sound and long-term development. The following EIA goals and objectives are

- *Description of the Proposed Project:* This is a full summary of all important operations that will be included in the proposed project, from the construction phase through the start-up and commissioning of the facilities to the operating phase.
- *Significant Environmental Impacts:* A important element in an EIA is identifying the impacts. There are generally two parts to the procedure. First, a comprehensive inventory of all effects is created, including small, short-term, moderate, direct, and indirect effects. Then, depending on scale, importance, extent, and specific sensitivity, the manageable important impacts are chosen for further investigation. The magnitude of the effect is the amount of change it will cause.
- *Analysis of the Project's Socio-economic Impacts:* The socioeconomic features of the current site should be recognised. The proposed project's effects on the socio - economic environment should next be evaluated. The usage of land, the primary economic activities, such as tourism and agriculture, the socioeconomic level within adjacent villages, employment levels, and the presence of archaeological or historical sites should all be included in the study.
- *Analysis of Alternatives:* All alternatives considered in the development of the project should be documented. If the project were to be relocated, for example, the potential repercussions should be assessed, as well as the related mitigation measures and costs.
- *Mitigation Action/Mitigation Management Plan:* While it is true that an unfavourable environmental impact cannot be completely eliminated, it is generally possible to minimise its severity. Mitigation is the term for this decrease. Each potential negative impact should have a mitigation strategy established and its cost estimated at each step of the project.
- *Environmental Management and Training Plan:* This section outlines how the environment will be handled during the building and operating stages of the project
- *Monitoring programme:* There should be a thorough environmental monitoring program/plan outlined. The rationale for

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

FUNDAMENTALS OF ENVIRONMENTAL EDUCATION

RESOURCE MATERIAL FOR ENVIRONENTAL EDUCATORS

Editor: Anu Jose Vengal

Edition - 01

FUNDAMENTALS OF ENVIRONMENTAL EDUCATION

RESOURCE MATERIAL FOR ENVIRONMENTAL EDUCATORS

EDITION - 1

Addressing the need for an authoritative academic work to make sense of this rapidly growing subject and its multidisciplinary corpus of scholarly literature, 'Fundamentals of Environmental Education' is a venture from a group of enthusiastic professionals in science education.

Edited by a teacher educator who has been experienced in science education and research for over a decade, this collection embraces various topics to bring together the foundational knowledge of Environmental Education in a single volume.

This book covers the undergraduate syllabus of Environmental Education at different Universities in Kerala.

'Fundamentals of Environmental Education' is a comprehensive compilation of current topics in the field, which will equip the learners to understand the concepts well.

It is an essential repository of materials on Environmental Education and is destined to be valued by scholars and students as a vital one-stop pedagogic resource.

PUBLISHED BY:

RCS BOOKS
Puthanagady Road, Kanjirappally,
Kottayam (Dist) - 686507
rcsbookstore@gmail.com

ISBN: 978-93-5680-718-1
978-93-5680-718-1

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

FUNDAMENTALS OF ENVIRONMENTAL EDUCATION

RESOURCE MATERIAL FOR ENVIRONMENTAL EDUCATORS

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Editor
ANU JOSE VENGAL

FUNDAMENTALS OF ENVIRONMENTAL EDUCATION

© Rights Reserved
First Published: November 2022

Anu Jose Vengal
Assistant Professor of Natural Science Education
Titus II Teachers College, Thiruvalla, Kerala.
annuvengal@gmail.com

Published by
RCS Books
Puthangady Road, Kanjirappally,
Kottayam - 686507
Mob: 8138876772

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means
without prior written permission from the publisher.

Rs. 320/-
ISBN: 978-93-8680-718-1
978-93-5680-718-1

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

CONTRIBUTORS

1. Anu Jose Vengal (Chapters 1 & 6)
   Assistant Professor
   Titus II Teachers College
   Thiruvalla
2. Arun Sam Chacko (Chapters 9 &10)
   M.Sc Botany
   CSIR-JRF/NET
3. Ashlin Biju (Chapters 13 & 21)
   M.Sc Botany
4. Feba Achu Andrews (Chapters 3 & 4)
   M.Sc Zoology
   UGC-JRF/NET
   GATE (Life Sciences)
   GATE (Ecology)
5. Harishma K H (Chapters 14 &15)
   B.Sc Zoology
6. Kripa John (Chapters 2 & 5)
   M.Sc Botany
7. Krishna Pradeep (Chapters 11 &12)
   M. A English
8. Leena Varghese (Chapters 7 & 8)
   M.Sc Mathematics
9. Sheney Murali (Chapters 17 &18)
   M.Sc Zoology
10. Sooraj C K (Chapters 7 &16)
    M.Sc Zoology
11. Sujeesh K George (Chapters 19 & 20)
    M.Sc Botany

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

CONTENT

Page No.

PART ONE –ENVIRONMENTAL EDUCATION

1 Meaning,Nature, Objectives and Psychological Perspectives of Environmental Education 09

2 National Movements to Protect the Environment and Relevance of Western Ghats 14

3 Environmental Impact Assesment 23

4 Legislative Measures for Environmental Protection at National and International Level 31

5 Methods and Strategies for Cultivating Ecoliteracy at Primary,Secondary and Higher Secondary Level 64

6 Environmental Citizenship – Importance, Environmental Ethics and Environmental Accountability 84

PART TWO – Our Environment

7 Ecosystem -Charateristics and Function 88

8 Energy flow in the Ecosystem, Ecological Succession, Ecological Pyramids 91

9 Bio-Geochemical Cycles 105

10 Carrying Capacity and Ecological Balance 113

PART THREE – Challenges of Environment

11 Environmental Pollution 116

12 Basic Concepts of Environmental Issues 139

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

13 Population Explosion and Urbanisation 151

14 Waste Management 159

15 Disasters 163

PART FOUR – Education for Sustainable Development

16 Sustainable Development and Education 169

17 Natural Resources: its Conservation and Role of Individuals 173

18 Bio-diversity and its Conservation 190

PART FIVE – Environment and Behavior

19 Environmental Sensitivity and Environmental Stress 201

20 Environmental Stressors 207

21 Effect of Stressors on Health and Behaviour 216

22 Bibliography 224

23 Subject Index 230

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

CHAPTER 4

LEGISLATIVE MEASURES FOR ENVIRONMENTAL PROTECTION AT NATIONAL AND INTERNATIONAL LEVEL

Environmental concerns and constraints may be regulated on a national or regional level, but some environmental challenges may affect multiple nations, prompting regional or global measures and agreements. Furthermore, transboundary issues, such as when an environmental issue that emerges in one country spreads to a neighboring nation, can add anxiety and aggravate the problem. So taking this into consideration, the global initiatives on transboundary relations have managed to formulate several laws and regulations for the same, by meeting up in several conventions and treaties. Due to conflicts between genuine needs and humanity's ever-increasing demand, laws dealing to biodiversity or environmental issues are easy to formulate but harder to enforce. The laws are strict in that they forbid behaviors that provide instant satisfaction but may prove dangerous to life on Earth in the long term. To address this problem, various tactics have been used at the national and international levels. The most convenient and effective of which is, of course, legislative measures.

To protect and preserve its natural resources, India uses a variety of policy measures. It was the first country to amend its constitution to include clauses relating to environmental conservation and restoration, public health, forest and wildlife protection. The country has traditionally placed a high priority on preserving the country's rapidly depleting natural resources. India is a signatory to a number of similar agreements around the world. Aside from that, every country has its own priorities and laws in this area. For the ease of understanding, we can classify those environmental legislations in India into 5 major categories, namely:

- General legislations.
- Waste Management Legislations.
- Legislations to conserve Forest and Wildlife.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

സാഹിത്യസിദ്ധാന്തങ്ങൾ

പൗരസ്ത്യവും പാശ്ചാത്യവും

എഡിറ്റർ

ഡോ. ജോസ് കെ. മാനുവൽ

ātma®
book with a soul

ആത്മ ബുക്സ്, കോഴിക്കോട്
പുസ്തകലോകം മലയാളം റിസർച്ച് ഫൗണ്ടേഷൻ

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Scanned with CamScanner

Malayalam
Sahithyasidhanthangal - Paurasthyavum Pachathyavum
(Study)
Author: Dr. Jose K. Manuel
Copyright: Author

Layout: Sheeja M
Cover Design: Sreejith George

First Published: August 2022
ISBN: 978-93-93969-57-6
₹ 1100

Pusthakalokam Malayalam Research Foundation
Reg.No. 52/IV/2022, Ernakulam, 682 312
Phone: +918848663483, +919496105082

Printed, Published by:

ātma®
book with a soul

Pavanatma Publishers Pvt. Ltd.
Parayanchery, Kuthiravattam (P.O.)
Kozhikode - 673 016
Ph: +91 9746077500, +91 9746440800
E-mail: atmabooks@gmail.com
www.atmabooks.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Scanned with CamScanner

പോപ്പുലർ കൾച്ചർ

അനൂപ് കെ. ആർ.

ഇരുപതാംനൂറ്റാണ്ടിന്റെ ഉത്തരാർദ്ധത്തിൽ യൂറോപ്യൻ ജ്ഞാന പരിസരത്ത് ഉദയംകൊണ്ട പഠനമേഖലയാണ് സംസ്കാരപഠനം. റെയ്മണ്ട് വില്യംസ്, റിച്ചാർഡ് ഹൊഗാർത്ത്, ഇ. പി. തോംസൺ, സ്റ്റുവാർട്ട് ഹാൾ, മാത്യു അർനോൾഡ്, ജോൺ ഫിസ്കെ തുടങ്ങിയവ രാണ് സംസ്കാരപഠനത്തെ ഒരു പഠനമേഖലയായി ക്രമപ്പെടുത്തി രീതി ശാസ്ത്രം രൂപപ്പെടുത്തിയത്. ഭൂതകാലത്തെക്കുറിച്ചുള്ള പഠനങ്ങ ളിൽനിന്നു വേറിട്ട് വർത്തമാനകാല ജീവിതപരിസരങ്ങളെ പഠന വിധേയമാക്കുവാൻ അവയ്ക്കായി എന്നത് സംസ്കാരപഠനത്തിന്റെ സവിശേഷതയായിരുന്നു. അതുവരെ പഠനവിഷയമായി കരുതി യിട്ടില്ലാത്ത പലതും പഠനത്തിന്റെ പരിധിയ്ക്കുള്ളിലേക്ക് ആനയി ക്കുന്ന കാഴ്ചയാണ് പിന്നീടുണ്ടായത്. യുദ്ധാനന്തരം ഇംഗ്ലണ്ടിൽ തൊഴിലാളിവർഗ്ഗ ജനവിഭാഗങ്ങളുടെ ദൈനംദിന ജീവിതത്തിൽ ടെലിവിഷൻ അടക്കമുള്ള മാധ്യമങ്ങളിലൂടെ പ്രചരിച്ച ജനപ്രിയ സാംസ്കാരികോൽപന്നങ്ങൾ സൃഷ്ടിച്ച മാറ്റങ്ങളും, ആശയലോ കത്ത് അവ രൂപപ്പെടുത്തിയ സ്വാധീനവും അതിന്റെ പരിണതഫല ങ്ങളും വിമർശന ബുദ്ധിയോടെ നോക്കിക്കാണാനുള്ള ശ്രമങ്ങളുടെ ഭാഗമായാണ് സംസ്കാരപഠനങ്ങൾ ആരംഭിക്കുന്നത്. ജനപ്രിയ സംസ്കാരത്തെ നിർവചിക്കുന്നതിനും അതിന്റെ സവിശേഷതകളെ ഇഴപിരിച്ചു കാട്ടുന്നതിനും വ്യത്യസ്തങ്ങളായ ചിന്താധാരകളും പഠനപദ്ധതികളും സ്വീകരിക്കുന്ന നിലപാടുകൾ വിഭിന്നങ്ങളാണ്. ഇരുപതാം നൂറ്റാണ്ടിന്റെ തുടക്കത്തിൽതന്നെ കലാസിദ്ധാന്തങ്ങ ളിലും സാമൂഹിക നര-വംശശാസ്ത്രപഠനങ്ങളിലും സംസ്കാര ചിന്തയിലും ജനപ്രിയസംസ്കാരമെന്ന ആശയവും രൂപപ്പെട്ടുവരു ന്നുണ്ട്. റെയിമണ്ട് വില്ല്യംസ് മുന്നോട്ടുവച്ച സാംസ്കാരിക ഭൗതിക വാദത്തെ പിന്തുടരുന്ന സമ്പ്രദായവും ബെർമിങ്ങ്ഹാം സർവ്വക ലാശാലയിൽ സ്ഥാപിതമായ സമകാലിക സാംസ്കാരികപഠന കേന്ദ്രത്തിൽ (Enter for conteporary Cultural Studies) രൂപമെടുത്ത സമ്പ്രദായവും ഫ്രഞ്ച് ഘടനാവാദം-ഘടനാവാദാനന്തര പരികല്പ നകളുടെ സാധ്യതകൾ ആരായുന്ന സമ്പ്രദായവും വ്യാഖ്യാനശാ സ്ത്രത്തിന്റെ ജർമ്മൻ ചിന്താപദ്ധതിയിൽ നിലനിൽക്കുന്ന സമ്പ്ര ദായവും വ്യതിരിക്തമായ സമീപനങ്ങളോടെയാണ് സംസ്കാര പഠ നത്തെ സമീപിക്കുന്നത്. ജനപ്രിയസംസ്കാരപഠനം പരമ്പരാഗത പഠനസമ്പ്രദായങ്ങളുടെ അതിരുകൾ മായ്ച്ചുകളഞ്ഞ് അതിരുകളി

MAR KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

Scanned with CamScanner

ല്ലാത്ത പഠനമേഖലയുടെ തുറവിയിലേക്ക് പഠിതാക്കളെ നയിച്ചു. അന്തർ വൈജ്ഞാനിക സമീപനത്തിന്റെ സാധ്യതകളെ ചുഴ്ന്നാണ് സംസ്കാരപഠനം മുന്നോട്ടു പോയത്. വ്യവസായ വിപ്ലവത്തിന്റെ സൃഷ്ടിയായും ആധുനികതയുടെ ഫലമായും വിപണിവത്കരി ക്കപ്പെടുന്ന സംസ്കാരമെന്ന ആശയത്തെ വിശദീകരിക്കുന്ന ചിന്ത കൾ പ്രബലമാണ്.

ജനപ്രിയസംസ്കാരത്തിന്റെയും കലകളുടെയും വികാസം പ്രാഥ മികമായും ബഹുജനം എന്ന സങ്കല്പനത്തിന്റെ രൂപപ്പെടലിൽ നിന്നാണ് ആരംഭിക്കുന്നത്. ബഹുജനസമൂഹം (Mass Society)എന്ന സങ്കല്പം രൂപപ്പെടുന്നതാകട്ടെ, മുതലാളിത്തം, നഗരവത്കരണം, വ്യവസായവത്കരണം എന്നിവയ്ക്ക് സമാന്തരമായിട്ടാണ്. വലി യൊരു വിഭാഗം ജനങ്ങളുടെ സൗന്ദര്യാനുഭവങ്ങളെയും ഭാവുക ത്വത്തെയും സൃഷ്ടിക്കുന്നതും രൂപപ്പെടുത്തുന്നതും ബഹുജനസം സ്കാരവും കലകളുമാണ്. ടെലിവിഷൻ സംസ്കാരത്തിന്റെ വ്യാപ നത്തിനും സ്വീകാര്യതയ്ക്കും ശേഷമാണ് ജനപ്രിയസംസ്കാരത്തെ ക്കുറിച്ചുള്ള പഠനങ്ങൾ വ്യാപകമായത്. സ്പോർട്സ്, സംഗീതം, കാർട്ടൂൺ തുടങ്ങിയവ ടെലിവിഷനിലൂടെ അപൂർവ്വമാംവിധം ജന പ്രിയമാവുകയും സാഹിത്യവും സിനിമയും ഈ പുതിയ മാധ്യമത്തി ലേക്ക് ആഗിരണം ചെയ്യപ്പെടുകയും ചെയ്തു. മാത്രമല്ല, നിലനിന്നി രുന്ന മുഴുവൻ സാമൂഹിക, സാംസ്കാരിക മണ്ഡലങ്ങളെയും രൂപ ങ്ങളെയും പുതിയൊരു കാഴ്ചാനുഭവത്തിലേക്ക് പരിണമിപ്പിക്കാനും ടെലിവിഷനു കഴിഞ്ഞു. നാളിതുവരെ ജനപ്രിയമല്ലാതിരുന്ന പലതും അതിജീവനത്തിനുള്ള ഉപാധിയെന്നനിലയിൽ ജനപ്രിയമാകാൻ പരിശ്രമിച്ചുതുടങ്ങി. ക്രിക്കറ്റ് കളി ഇന്ത്യയിൽ ഒരു ദേശീയതയും മതവും വ്യവസായവുമായി മാറിയത് ഇതിനുള്ള ഉദാഹരണമാണ്. ഇതേ പാതയിൽതന്നെയാണ് സാഹിത്യവും ചലച്ചിത്രവും ടെലി വിഷൻ പരിപാടികളും സഞ്ചരിച്ചുകൊണ്ടിരിക്കുന്നത്. പ്രേക്ഷക രുടെ ബോധാബോധങ്ങളെ ഇളക്കിമറിച്ചുകൊണ്ടാണ് ഇവ ജന പ്രിയ രൂപങ്ങളായി മാറിയത്.

മാത്യു അർണോൾഡിന്റെ 'കൾച്ചർ ആൻഡ് അനാർക്കി' (ആ869) എന്ന ഗ്രന്ഥത്തിൽ മാനവരാശിയുടെ ഉദാത്ത സംസ്കാരത്തെ നശി പ്പിക്കുന്ന അരാജകത്വപ്രവണതകളെ ചൂണ്ടിക്കാണിക്കാനും ഉന്നതസം സ്കാരത്തിന് നിർവചനം നൽകാനുമാണ് പരിശ്രമിച്ചത്. അർണോൾഡ് മുന്നോട്ടുവച്ച അരാജകത്വത്തെ ജനപ്രിയസംസ്കാ രത്തിന്റെ അടയാളമായി സംസ്കാരപഠനമേഖല പരിഗണിച്ചു പോന്നു. അർണോൾഡ് മുന്നോട്ടു വച്ച നിലപാടുകൾ ഉദാത്തം/ജനപ്രിയം (അരാജകത്വം) എന്ന ദ്വന്ദ്വപരികല്പന രൂപപ്പെടുത്തി. ലോകത്തിൻ ഇന്നേവരെ പറയപ്പെട്ടതിലും ചിന്തിക്കപ്പെട്ടതിലും ഏറ്റവും മികച്ച വയുടെ ആകത്തുകയെയാണ് സാംസ്കാരികമായി അർണോൾഡ് പരി

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

Scanned with CamScanner

ഗണിച്ചിരുന്നത്. ഇത്തരത്തിലുള്ള ഉന്നത സംസ്കാരത്തെ നശിപ്പിക്കുന്നതും സംസ്കാരത്തിനു പുറത്തുള്ളതുമായ ഒന്നായിട്ടാണ് അരാജകത്വത്തെ അദ്ദേഹം അവതരിപ്പിച്ചത്. ഉന്നതസംസ്കാരം/ അരാജകത്വസംസ്കാരം എന്ന ദ്വന്ദ്വപരികല്പനയിലേക്കാണ് അർണോൾഡിയൻ ചിന്തകൾ സഞ്ചരിച്ചത്.

മാത്യു അർണോൾഡ് മുന്നോട്ടുവച്ച ചിന്താപദ്ധതിയെ സജീവമാക്കുകയും തുടർപഠനത്തിന്റെ സാദ്ധ്യതകൾ ആരായുകയും ചെയ്തത് എഫ്. ആർ. ലീവിസ്, ക്യൂ. ഡി. ലീവിസ്, ഡെന്നീസ് തോംപ്സൺ തുടങ്ങിയവരാണ്. ഇവർ ലീവിസൈറ്റുകൾ എന്നാണ് അറിയപ്പെടുന്നത്. 1930-ൽ ബഹുജനമാധ്യമമായി പരിഗണിച്ചിരുന്ന ഹോളിവുഡ് ചലച്ചിത്രങ്ങൾ റേഡിയോ, പത്രം, പരസ്യങ്ങൾ തുടങ്ങിയവ ഇവർ പഠനവിധേയമാക്കി. ഇത്തരം ബഹുജനമാധ്യമങ്ങളുടെ വ്യാപനത്തെ ഭയപ്പാടോടെയാണ് അവർ നോക്കിക്കൊണ്ടിരുന്നത്. നിലവിലുള്ള ഉന്നത സംസ്കാരത്തെ നശിപ്പിക്കുന്ന ഒന്നായിട്ടാണ് ബഹുജനമാധ്യമത്തെ അവർ നോക്കിക്കണ്ടത്. ഇതുവഴി സംസ്കാരത്തിന് ജീർണ്ണത സംഭവിക്കുന്നതായി അവർ ഭയപ്പെട്ടു. വാണിജ്യപരമായ താത്പര്യം സംരക്ഷിക്കുന്ന ബഹുജനമാധ്യമങ്ങൾ സംസ്കാരത്തിന്റെ പരിധിക്കു പുറത്തായി. ഒരു തരത്തിലുള്ള വിപണി സംസ്കാരമായിട്ടാണ് ഇവർ ജനപ്രിയ സംസ്കാരത്തെ നോക്കിക്കണ്ടത്. ആൾക്കൂട്ടത്തിന്റെ ഉപഭോഗത്തിനായി വിപണി നിർമ്മിക്കുന്നതാണ് ഈ സംസ്കാരമെന്നും സാമ്പത്തിക ലാഭം മാത്രമാണ് ഇവിടെ മൂല്യനിർണ്ണയത്തിന്റെ മാനദണ്ഡമായി വരുന്നതെന്നും അവർ വാദിച്ചു. ഇറക്കുമതി ചെയ്യപ്പെടുന്ന പാശ്ചാത്യ സംസ്കാരത്തെയാണ് വിപണി സാംസ്കാരമായി പരിഗണിക്കുന്നത്. എഫ്. ആർ. ലിവീസിന്റെ മാസ്സ് സിവിലിസേഷൻ ആന്റ് മൈനോരിറ്റി കൾച്ചർ(1930), ക്യൂ. ഡി. ലീവീസിന്റെ ഫിക്ഷൻ ആന്റ് റീഡീംങ് പബ്ലിക്(1932), എഫ്.ആർ. ലീവിസും ഡെനീസ് തോംസനും ചേർന്നെഴുതിയ 'കൾച്ചർ ആന്റ് എൻവിയോൺമെന്റ്'(1933) തുടങ്ങിയ കൃതികളും ചിന്തകളും സംവാദങ്ങളും സംസ്കാര പഠനപദ്ധതിയിൽ ജനപ്രിയ സംസ്കാര പഠനത്തിന് അർഹമായ പരിഗണന രൂപപ്പെടുത്തി.

ലീവിസൈറ്റുകൾ രൂപപ്പെടുത്തിയ ജനപ്രിയസംസ്കാര പഠനപദ്ധതിയുടെ ആശയമണ്ഡലത്തിൽ നിലയുറപ്പിക്കുമ്പോൾതന്നെ വിയോജിപ്പുകൾ മുന്നോട്ടുവച്ചുകൊണ്ട് പുതിയൊരു പാത രൂപപ്പെടുത്താനാണ് റിച്ചാർഡ് ഹോഗർറ്റ്, സ്റ്റ്യൂവർട്ട് ഹാൾ, റെയ്മണ്ട് വില്യംസ്, ഇ.പി. തോംസൺ, പാഡി വെയ്നൽ തുടങ്ങിയവർ പരിശ്രമിച്ചത്. ജനങ്ങളിൽ നിന്നും രൂപപ്പെടുന്ന ജനകീയ സംസ്കാരവും പരസ്യമുൾപ്പെടെയുള്ള ബഹുജനമാധ്യമങ്ങളുടെ പ്രേരണയാൽ ജനങ്ങളിൽ ചേക്കേറുന്നതുമായ ജനപ്രിയസംസ്കാരവും

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502
Scanned with CamScanner

രണ്ടും രണ്ടെന്ന നിലപാടാണ് റിച്ചാർഡ് ഹോഗർട്ട് മുന്നോട്ടു വച്ചത്. ഈ ചിന്താഗതി ജനകീയം/ജനപ്രിയം എന്ന ദ്വന്ദ്വപരികൽപനയിലേക്ക് ജനകീയസംസ്കാര പഠന മണ്ഡലത്തെ നയിച്ചു. മാർക്സിസ്റ്റ് ചിന്താസരണിയുടെ സാധ്യതകൾ പ്രയോജനപ്പെടുത്തിക്കൊണ്ട് ജനപ്രിയസംസ്കാരത്തെ വീക്ഷിക്കാനാണ് റെയ്മണ്ട് വില്യംസ് പരിശ്രമിച്ചത്. മാത്യു അർണോൾഡും ലീവിസൈറ്റുകളും മുന്നോട്ടു വച്ച നിരീക്ഷണങ്ങളോട് യോജിക്കുമ്പോൾ തന്നെ വില്യംസിന് തന്റേതായ നിലപാടുകളിലൂന്നി ജനപ്രിയ സംസ്കാരപഠനത്തെ അവതരിപ്പിക്കാനായി. സംസ്കാരം എന്നതിന് ലോകത്തിലെ ഭിന്ന ജനവിഭാഗങ്ങളുടെ ഭിന്ന ജീവിതശൈലികൾ എന്നൊരു നിർവചനം അവതരിപ്പിച്ച് ജനപ്രിയശൈലികളുടെ പലവകയെപ്പറ്റിയുള്ള പഠിക്കലായിരുന്നു ഇന്ദ്രിയസംസ്കാരത്തിന്റെ ലക്ഷ്യം. ഏതെങ്കിലും ജീവിതശൈലി ഉയർന്നതെന്നോ മോശമെന്നോ ചിത്രീകരിക്കുകയും ചെയ്യുന്നു. സംസ്കാര പഠനത്തിന്റെ ലക്ഷ്യം കുറച്ച് വൈവിദ്ധ്യങ്ങളെ ഉൾക്കൊള്ളാനും പഠന വിധേയമാക്കാനുമാണ് വില്യംസ് ശ്രമിച്ചത്. അനേകമാളുകൾക്ക് ഒരുപാട് ഇഷ്ടം തോന്നുന്നവയെയാണ് റെയ്മണ്ട് വില്യംസ് ജനപ്രിയം എന്നു വിളിക്കുന്നത്. ഇത്തരം സംസ്കാര രൂപങ്ങൾ ആസ്വദിക്കുന്നതിന്, ഉപയോഗിക്കുന്നതിന് എളുപ്പമുള്ളവ എന്ന നിലയ്ക്കാണ് ഇവയെ പരിഗണിച്ചിരുന്നത്. കൾച്ചർ ആൻഡ് സൊസൈറ്റി (19) എന്ന ഗ്രന്ഥത്തിലൂടെ ജനപ്രിയസംസ്കാരപഠനത്തിന് റെയ്മണ്ട് വില്യംസ് സൈദ്ധാന്തികാടിത്തറ രൂപപ്പെടുത്തി. അതോടെ ആധുനികത അപ്രസക്തമാക്കിയ/അപ്രധാനമാക്കിയ പലതും ജനപ്രിയസംസ്കാര പഠനം പഠനവിധേമാക്കി. അതുവരെ അപകൃഷ്ടമെന്ന് കരുതിയവ പ്രശ്നവത്കരിക്കപ്പെട്ടു.

ജനപ്രിയതയുടെ സമവാക്യങ്ങൾ കാലദേശങ്ങൾക്കനുസരിച്ച് മാറിമറിഞ്ഞുകൊണ്ടിരിക്കും. ഒരു സാംസ്കാരിക രൂപത്തിനും ഏക്കാലവും ജനപ്രിയമായി നിലനിൽക്കാൻ സാധ്യമല്ല. വൈവിദ്ധ്യത്തിന്റെയും വൈരുദ്ധ്യത്തിന്റെയും സ്വഭാവങ്ങൾ പ്രകടിപ്പിക്കുന്നവയാണ് ജനപ്രിയ സംസ്കാരരൂപങ്ങൾ. ചലച്ചിത്രം, കാർട്ടൂണുകൾ, ടെലിവിഷൻ, കായികവിനോദങ്ങൾ, സംഗീതം, സാഹിത്യം, പത്രം, പരസ്യങ്ങൾ, വിഡിയോഗെയിം, പകൽപ്പൂരങ്ങൾ, താരനിശകൾ, കാർണിവൽ, ഭക്ഷ്യമേള, ഫാഷൻഷോ, പുസ്തകമേള, ഗാനമേള സാമൂഹിക മാധ്യമങ്ങൾ തുടങ്ങിയവ അവഗണിക്കുകയല്ല അപഗ്രഥിക്കുകയാണ് വേണ്ടതെന്ന വീക്ഷണം ജനപ്രിയസംസ്കാര പഠനരംഗത്ത് രൂപപ്പെട്ടു. ജനപ്രിയതയെക്കുറിച്ചുള്ള കാഴ്ചപ്പാടുകളിൽ നിലനിൽക്കുന്ന അഭിപ്രായാന്തരം ജനപ്രിയസംസ്കാര പഠനത്തെ വൈവിദ്ധ്യം നിറഞ്ഞതാക്കി. ഒരുപാടു പേർ ഇഷ്ടപ്പെടുന്നത്, തരംതാണ സൃഷ്ടികൾ, ജനങ്ങളുടെ പ്രീതി പിടിച്ചുപറ്റാൻ രൂപപ്പെടു

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

Scanned with CamScanner

ന്നത്, ജനങ്ങൾതന്നെ അവർക്കുവേണ്ടി രൂപപ്പെടുത്തുന്ന സംസ്കാരം, ഉന്നത സംസ്കാരം എന്ന പേരിൽ നിലനിൽക്കുന്ന മുഴുവൻ സംസ്കാരങ്ങൾക്കും വെളിയിലുള്ള സംസ്കാരം, ഉദാത്ത സംസ്കാരത്തെ നശിപ്പിക്കുന്ന അരാജകത്വസംസ്കാരം, ആൾക്കൂട്ട സംസ്കാരം, പരസ്യമടക്കമുള്ള ബഹുജനമാധ്യമങ്ങളിലൂടെ ജനങ്ങളിൽ പ്രചരിക്കുന്ന സംസ്കാരം, ഇറക്കുമതിചെയ്യപ്പെടുന്ന പാശ്ചാത്യസംസ്കാരം എന്നിങ്ങനെ വൈവിദ്ധ്യവും വൈരുദ്ധ്യവും നിറഞ്ഞ കാഴ്ചപ്പാടുകളാണ് ജനപ്രിയസംസ്കാരത്തിന്റെ സവിശേഷതകളായി ചിന്തകന്മാർ ചൂണ്ടിക്കാട്ടുന്നത്. സംസ്കാരപഠനം, ചലച്ചിത്രപഠനം, മാധ്യമപഠനം, സ്ത്രീവാദപഠനം, ദളിത് പഠനം, പരിസ്ഥിതി പഠനം, സാമൂഹിക നരവംശശാസ്ത്ര പഠനം തുടങ്ങി നിരവധി പഠനപദ്ധതികൾക്കുള്ളിൽവച്ച് ജനപ്രിയസംസ്കാരത്തെ അക്കാദമികസമൂഹം പഠനവിധേയമാക്കിക്കൊണ്ടിരിക്കുന്നു. ജനപ്രിയസംസ്കാര പഠനത്തിന്റേതായി പുറത്തുവരുന്ന പഠനങ്ങളിൽ ഏറ്റവും കൂടുതൽ സിനിമയെ സംബന്ധിക്കുന്നവയാണ്. "മനുഷ്യൻ കണ്ടുപിടിച്ചവയിൽവച്ച് ഏറ്റവും ജനസമ്മതിയാർജ്ജിച്ച സംസ്കാരരൂപമാണ് സിനിമ". എന്ന റെയ്മണ്ട് വില്യംസിന്റെ നിരീക്ഷണത്തോടു ചേർത്തുവച്ച് ജനപ്രിയസംസ്കാര പഠനത്തിന്റെ വർത്തമാനാവസ്ഥയെ നോക്കിക്കാണാവുന്നതാണ്. സമകാലിക അക്കാദമിക് വ്യവഹാരങ്ങളിൽ ഏറ്റവും ശ്രദ്ധേയമാണ് ജനപ്രിയ സംസ്കാരപഠനം. സാഹിത്യപ്രവർത്തകർ മാത്രം സാംസ്കാരിക പ്രവർത്തകരാകുന്ന 'ബോധ'ങ്ങളിൽ നിന്നും ഏകശില്പാത്മകമായ 'സംസ്കാര' ചിന്തയിൽ നിന്നും വൈവിദ്ധ്യങ്ങളെയും വൈരുദ്ധ്യങ്ങളെയും ഉൾക്കൊള്ളുന്ന ചിന്തയുടെ തുറവിയിലേക്ക് അക്കാദമിക് സമൂഹത്തെ കൊണ്ടെത്തിക്കുവാൻ ജനപ്രിയസംസ്കാര പഠനങ്ങൾക്കായി എന്നത് ജനപ്രിയസംസ്കാര പഠനത്തിന്റെ വർത്തമാനകാല പ്രസക്തിയിലേക്കാണ് വിരലൂന്നുന്നത്.

ഗ്രന്ഥസൂചി

1. അജു.കെ.നാരായണൻ, 2012, *കേരളത്തിലെ ബുദ്ധമത പാരമ്പര്യം നാട്ടറിവുകളിലൂടെ*, കോട്ടയം, സാഹിത്യപ്രവർത്തക സഹകരണ സംഘം.
2. അജു. കെ.നാരായണൻ. ചെറി ജേക്കബ് കെ. 2012, *പലവക: സംസ്കാരപഠനങ്ങൾ*, കോട്ടയം, സാഹിത്യപ്രവർത്തക സഹകരണ സംഘം.
3. ഒരു സംഘം ലേഖകർ, 2007, *സംസ്കാരപഠനം: ചരിത്രം, സിദ്ധാന്തം, പ്രയോഗം, കാലടി*, മലയാള പഠന സംഘം.
4. രവീന്ദ്രൻ, പി.പി.,2002, *സംസ്കാരപഠനം*, ഒരാമുഖം, കോട്ടയം, ഡി.സി.ബുക്സ്.
5. ഷാജി ജേക്കബ്, 2009, *ജനപ്രിയ സംസ്കാരം: ചരിത്രവും സിദ്ധാന്തവും*, കോഴിക്കോട്, മാതൃഭൂമി ബുക്സ്.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

Scanned with CamScanner

6. സ്കറിയാ സക്കറിയാ, 2001, *500 വർഷത്തെ കേരളം ചില അറിവടയാളങ്ങൾ*, കോട്ടയം, കറന്റ് ബുക്സ്.
7. Baldwin, E., 2004, Introducing Cultural Studies, New york: Pearson/ Prentice Hall.
8. Eagleton, Terry, 2000, The Idea of Cultural studies, London: Routldge.
9. Sardar, Z. & Van Loon, B., 1999, Introducing Cultural Studies, Cambridge, UK:Icon.
10. Williams, R., 1958, Culture and Society: 1780-1950, Londong: Chatto and Windus.
11. ...., Keywords: A Vocabulary of Culture and Society, Newyork: Oxford University Press.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Scanned with CamScanner

PROCEEDINGS
of
The National Seminar
8-9 December 2022

RESEARCH METHODOLOGY IN LIFE SCIENCES: TRENDS & INNOVATIONS

Organized by:
Post Graduate & Research Department of Zoology
St.Thomas College, Kozhencherry,
Kerala - 689 641
E-mail:zoologystthomas@gmail.com

Sponsored by:
Kerala State Council for Science, Technology, and Environment (KSCSTE),
Thiruvananthapuram, Kerala

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE
PAMPADY - 686 502

Proceedings of the National Seminar
on

RESEARCH METHODOLOGY IN LIFE SCIENCES: TRENDS & INNOVATIONS (RMLS, 2022)

8-9 December, 2022

Ad Majorem Dei Gloriam

Organized by

Postgraduate & Research Department of Zoology
St. Thomas College, Kozhencherry, Pathanamthitta, Kerala, India - 689 641
E-mail: zoologystthomas@gmail.com

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE ★ PAMPADY - 686 502

Sponsored by

Kerala State Council for Science, Technologyand Environment (KSCSTE)
Thiruvananthapuram, Kerala

ANTI-OXIDANT AND CYTOTOXIC EFFECTS OF SIMAROUBA GLAUCA ON HIGHLY METASTATIC B16F10 MELANOMA CELLS

A M MEHJEBIN[1] and MAHIMA ANN ABRAHAM [2*]
[1]Catholicate College, Pathanamthitta, Kerala
[2]Kuriakose Gregorios College, Pampady, Kerala
* Corresponding author's E-mail: mahima.ann@gmail.com

Abstract

Promising anticancer drug research alludes to exploring nature and natural products, as it is a physic garden with myriad unexplored organisms from unicellular probiotic bacteria and photosynthetic plants to multicellular, heterotrophic animals that could give rise to miraculous remedies. In vitro and in vivo studies of leaf extract of Simarouba glauca have revealed its anticancer potential (Jose et al., 2018; Vikas et al., 2022) and its significance in anticancer drug development, but their potential against skin cancer has not yet been explored. In this work, dried leaf extracts of S. glauca were prepared using two solvents: hexane and ethanol. These extracts were used to conduct DPPH and MTT assays. The experiments established that the ethanolic extract of S. glauca has significant antioxidant and anti-cancerous potential on highly metastatic B16f10 melanoma cells (which are used in skin cancer research). The findings indicate that the leaf extract of S. glauca or compounds derived from it can be perused as drugs for malignancy treatment especially skin malignancy but only after further in vivo and clinical examinations.

Keywords: *Simarouba glauca*, skin melanoma, DPPH assay, MTT assay, B16f10 cells

Introduction

Cancer refers to a large group of diseases which can originate in any location of the body, characterized by uncontrolled division of cells which eventually get the ability to invade other tissues. Hanahan and Weinberg in 2000 put forward several key qualities possessed by neoplastic growths that make them exceptionally smarter than the normal cells, enabling them to grow and spread faster. These hallmarks were revisited in 2011 (Hanahan & Weinberg, 2011) and then in 2022 (Hanahan, 2022) to include more generalities that could be used to distinguish such cells. Some of these are altered genomes, resistance to apoptotic signals and cell death, changed cellular metabolism, immortality and metastasis.

Mutations associated with cancer involve changes that promote as well as prevent apoptosis. While the aforementioned changes trigger the beginning, continuance and metastasis of tumours; the latter exert a selective pressure on the neoplastic cells. Many cytotoxic drugs used in treatment work via inducing apoptosis (Lowe & Lin, 2000). Melanoma contests to be the most dangerous form of skin cancer as it possesses ability to evade apoptosis and proliferate treacherously. Cancer therapies against melanoma have not been fully successful (Soengas & Lowe, 2003). It seems, delving deeper towards understanding the components altered in apoptotic pathways coupled with discovering new cytotoxic drugs is the way forward towards combatting melanoma.

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE PAMPADY - 686 502

Prof.(Dr.) Renny P. Varghese
Principal
Kuriakose Gregorios College
Pampady, Kottayam - 686 502

KURIAKOSE GREGORIOS COLLEGE ★ PAMPADY - 686 502 ★

Published by:
Post Graduate & Research Department of Zoology
St.Thomas College, Kozhencherry,
Kerala - 689 641

ISBN 978 - 81 - 924843 - 0-5
9 7 8 8 1 9 2 4 8 4 3 0 5